



सौ  
व  
र्ण

सुमित्रानन्दन पत्त



भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपाठ लाकादय प्रथमाला हिंदा प्रथाङ्क-६६

प्रथमाला सम्पादन नियामक

लक्ष्माचन्द्र चन

●  
SAUVANA

[ Po m l

SUMITI ANANDAN IANT

Th at y ( v [ t l l b l t n

Second Edition 1963

Pr R J

●  
प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपाठ काणा

मुद्रक

सम्मति मुद्रणालय वाराणसी

द्वितीय सम्स्करण १९६३

, मू य मात तान रूपय

●

## विनापन

सौमण्यक अतगत मर दा काव्य रूपक संग्रहात हे, जा अपन संक्षिप्त रूपमें आकाशवाणीसे प्रसारित हा चुने ह । 'सौमण्य' का रचनाकाल मार्च १९५४ है और 'स्वप्न और सत्य' का नवम्बर १९५२ ।

१/७ था०, म्मनला राट  
दगाहाबाद }

—सुमित्रानन्दन पत

## द्वितीय संस्करण

इस संस्करणमें 'दिग्विजय' नामक नवीन काव्य रूपक भी जोड़ दिया गया है, जिसका प्रेरणा मुक्त यूसुफ गगारिनका अंतरिक्ष यात्रास मिस्री ।

१ फरवरी ६२ }

—सुमित्रानन्दन पत



बधुवर  
श्री रामचद्र टडनको  
सप्रेम



३

## सौवर्ण

[ सकेनकालीन मा त्व नृत्योके विकासका प्रतीक रूपक ]

५



श्वदृत

श्वदृती

देव

देवी

कवि

सौवर्ण

अय श्री पुण्य श्वर

[ युगांतर सूचक वाग्नि गगात ]

[ डमर ध्वनि व गाय नपथ्य म उष्णाय ]

पृष्ठभूमि में शोभित मीन हिमाद्रि श्रणिषा  
विश्व साभूतिर सत्य मी श्रित शुभ मनातन,—  
दिग् विगद् यह दृश्य याग्य अमरों क निश्चय ।

परिद्वमा कर रह देवगण धरा शिरसर मी  
अर्ध अगार जगमग छायातप में भूपित  
इलक्ष्म मधुर कंठी म गाते श्रिय रदना  
नय युगांतर ना मन में मरत पा रहम ।

गग घट पाणा मुदग गधर रजाने,  
विश्रियों क संग विश्व दग्ते गगानन  
प्राम गुं मगल स्तर अर पथ में गुंनित  
शरण के दिर अमों का गापन मभापण ।

[ गग पंथ धागा मग आि वा उष्मिन धार ]

[ दत्तात्रेय स्तवन ]

जय हिमाद्रि त्रय हे !

जयति, स्वर्ग भाल अमर,  
जयति विश्व हृदय शिखर,  
जयति, सत्य शिव सुंदर,  
शाश्वत अक्षय हे !

पुण्य सेतु, दर निलय,  
संस्कृति क शुचि सचय,  
नदा सापान अभय,  
शुभ शान्तिमय हे !

धर्म चतना निर्धार,  
वन मन क याति तार  
सयम तप मक्ति द्वार  
शिव मंगलमय हे !

विष्णु ह्यम नम विष्णु  
उर म स्वत विष्णु  
कात्रि मृतन प्रलय लाम  
सुख दुःख अभिनय, हे !

पावन मुर वारि निग्नर  
उर म स्वणिम रर भर  
भू रज रसते उरर,  
जड़ चित् परिणय ह !

करल, भास्वर, अमेय,  
ध्यानावस्थित अजेय,  
जीवन के चरम ध्येय  
चिन्मय, तमय ह !

हरित श्रवनि भरित श्रक,  
रहस क्लामय मयक,  
काल व्याल से निशक  
मृत्युजय, तय ह !

उदित कौन परम लक्ष्य  
मनश्शक्त के ममक्ष ?  
ऊर्ध्व प्राण मौन वक्ष,  
गुर नर विस्मय ह !

## देव

निभृत याम यह मय निशा का, गुह्य तमसमय,  
 गहन अवनन मन सा रहस मान से मुत्तरित,—  
 भृत निशा ही देव जागण का बला भी ।  
 अतल मूढ भय नाच, उपर नारन विस्मय,  
 महा प्रदति विनाम कर रही म्वम-वक्ष मे,—  
 रज सत तम हा लीन आत्म विस्मति के पट म ।  
 रमा निचिड़ तिमिर छाया यह, महा दिशा क  
 रजान मा महाफल क वक्षमथल पर  
 गा लानमाआ क आरतो मे लहरा,—  
 मृवन हय क प्राति पाश म रेन हुण दो ।  
 दिव्य तमम यह दिव्य विभा म हागा वितरित  
 ढापित कर भय विस्मय का आशा प्रतीति स ।

## दशो

शक्त पक्ष नरमा क शशि का साम्य पाइन मुग  
 मान मधुरिमा, आभितात्य गरिमा म मन्त्रित,  
 नीम्य मम्माहण वरमाता अतर्गित्त म  
 अधकार क निगिन वगत का कट्ट विदु वन,—  
 अतमन क शान मुक्क मा विर तेजामय ।  
 हिम शिगग पर प्रवि भनित शन रगत रमिया  
 आन वक्ति आभायो म प्रतिवृत्त हा रहा  
 दान प्रणआ सी, निस्वर उमपा सो,—  
 रीन रत्ना हा सति तद्धिन् हपाविग म ।  
 म्वन म्दग्नि वल रटना वगमग वन आपविया  
 िना पम्बिया क पुणो मा शन रणो म,  
 र्दधनु-ग म र्द कर म्वन दूत नर  
 विष्णु करन अवनन मनादुभि म,—  
 अदुत रनरणा उपाभ्या र्दम मृवन का ।

## देव

पतझर मधु का मधिकाळ यह भर भर पडत  
 पीले पत्रों के मभर क्षण, उर रुदन मे,  
 प्राण वायु का मलय स्पर्श पा, गत स्मृतियों के  
 जीण भार से हृदय मुक्त कर, मृग धरा के  
 उपरतन मे गापा अस्फुट पद चापा से  
 मौन प्रतीक्षा, आशा का सगात वहन कर।—  
 निर्जन जन म गूँच उठी लय सृजन व्यथा का।  
 रचत कुहास मं लिपटी रनिया की स्वर्णम  
 अर्ध गुली पलकें हैंस उठता स्वप्न जगत में,  
 नाम हीन सौंभ म डूब गया दिगत मन।  
 अंतःशतन सूक्ष्म भुवन हा रह पल्लवित,  
 निरन्तर सन्मण-वता भू भानम विकास की।

## दवी

अधिमानम का शल गया जा-रल्य, स्वप्न स्मित,  
 यश-काय चेतय का अजर अतमन का  
 सार तरु मानव मस्मृति का अमर दाय धन।  
 निमग्न शिखरा पर ऊर्ध्वासिशो मे भर भर  
 शत शत रत्न छुगार छहराता प्रकाश की,  
 जम अभी ल सस गहा जा मनागुहा म।  
 न क अतर्वापन का प्रतिहाम अर्वास्विक  
 पुत्राभूत हुआ स्वप्ने, युग युग मे विस्मित—  
 सूक्ष्म जगत के मापानों म उठ यतमुरा।

## दव

आग तरुल चना शक्तिया जम धरण कर  
 यानि प्रीति गुणना की स्वर्ण विमर्षि मा

नर म्यर सय गति म नि म्यर नुर भूत क  
 र्मि म्कुरित अतनम म अतनगि हा ग्हा  
 ध्यान मान म तयाभमि क ग्जन व्याम मे ।—  
 न श्रदा रिनाय, रतना की मासो म  
 तहा मत्त-पग्गित पारता परमभर म ।

### दवा

काटि लक्ष युग वात म्य च निम्नन अम म  
 ध्याति न्मम सा निरग वा चैतन्य मार यह  
 गने जन उठ, उष्य भाल पर धारण कर निज  
 गति गशि तारा तन्नि मुष्ट स्मित आत्मनव रा ।  
 मामनो सदाटा धनिको क युग मे बहु  
 विक्रमित हाता ग्हा गुद्य अत म्भ रू यह,  
 मम गुत्तन्ति म्मकी प्राणो का टागा म  
 रीयन रैभव ग्हा भूतना नर शामा मे ।

### दव

नया माण्डनिक उक्त उन्नि हा ग्हा निनिज म  
 मानव चायन मन रा नर रूपातर क्गन  
 नर सगति मे मत्ता परिस्थितियो रा भू का,  
 नरत मतुवन भर बहिरतर क यथाय मे ।  
 नरमा का मणि रतश पूण चैतन्य मुधा म,  
 स्वम द्रवित राका धग्माण्या भगिय का,  
 त्र दृष्टि अनिजम कर तुरा मनुव क मन रा  
 मन्त्रिय फिर म दिय चनना, नव्य मचरण  
 गुहा उठ ध्यानिनिमर सा युग-मचण अर,  
 नर भू रा मन्नि करन चायन शामा मे ।  
 दवा, नह म्यत उतरते म्मन पर म्मित,  
 आआ, हम निनाम करे ध्यानायम्भित हा ?

[ दवा का जनार्दन नामा स्वदूता का प्रवचन ]

स्वदूती

आ नभसर, आ गौर, क्या स्वप्नों में जाग्रत  
भाव पग वर गय तुम्हारे ? क्या द्विपे हा ?

स्वदूत

मैं हूँ तो, गेचरी, क्या कहूँ, इन अमरों का  
नित नव रंभन देग, दृष्टि अपलक रह जाता ।  
घरस रही स्वप्नों की जगमग नीरव शाभा  
स्वर्णम पगदियों में भर भर अतनभ से,  
चम्पिन रह गय लोचन क्षण भर ज्याति मूट हा ।

[ प्रमत्त वाचन मगत ]

यह अमरों का पुण्य धाम, गोपन कीडा स्वल,  
मृद्धम चतना, सृजन शक्तियों का प्रतीक जो  
आज अतद्रित मनस्वग के धामी सुरगण  
तपोभूमि में हिमवत् की समतत हा रह,  
कल्याण का रहस समय मन्त्रिकट जानसर,—  
हम जिनक नर युग के प्रतिनिधि अप्रदूत हैं ।

स्वदूती

रहा दा इन प्रतिक्रियावादी दवों का,  
मृद्ध मनुष्य का स्वप्न पनायन मिसलाते ना ।  
आमा, हम भु भ्रमण करें म्मिन छाया पथ मे,  
उन युग की नर परिणति देगे मनुष्य लार में ।

स्वदूत

क्या य पौराणिक प्रयाग अथ भा सभर है ?



## स्मृता

सब कुछ सभर ह प्रगल्भ कल्याण क लिए,  
जा विद्युत् गति से अणु सब से उगती है।  
जैसे प्रयागा का यह तीर्थर गगन गगन म  
सायुष्या से उड़ उस युग का भौतिक माता  
दर्यान म विगण करता अर, अरर र  
मखित उर का विद्युत् पन्ना म विरिण कर।

| गगधरि जीर मत्रागर |

वह दत्ता, स्मित अधित्यका अतर्मानम सी  
अपियो र पारन आत्म सी भी ध्यान रन  
नासाग र रर लग नीरर विनन से,  
लटके धूल कपाय माधना रिग विर म  
लिपे पुते तृण प्रागण सुधर सास्त्रर मन म  
यज्ञ धूम, मत्राच्चारो से लगते धूमिल।  
विचरण करते यहाँ मगो क छाने अर भा  
निन अत्राध विस्मित विनन से दरर उगत का  
सागो से सहला मनियो के ममाधिस्थ नन।  
यहाँ आत्म द्रष्टा तापम उड विनन में  
पद्मामन स्थित, कडित हग नासाय भाग में,  
आराहण रर रहे ऊध्व श्रणिया माम की  
प्राणो सी सतरँग छायाँ छाल रर निरिल,  
तमय विश्व रित, अररड ब्रह्माड सत्य को  
जाने-सा अगुष्ट मात्र पा, आस काम मन।

## स्मृत

धान-सा अगुष्ट मात्र? यह विडम्बना है  
मानर मन सी विश्व, जा अति भार प्ररण हा,  
घट का मागर में मन्त्रि करने क उदले  
सागर का बाधना चाहता सामित घट म।

अग्नि ज्योतिष सत्ता के सक्रिय अमर मत्स्य का  
 आत्म रूप में परिणत कर निष्क्रिय मात्मानन् ।  
 हाथ अमभय से सभय करने का निष्कृत  
 चेष्टा में वह शब्दजाल रचता जाता नर ।

### स्वदूती

वह देखा, वह भू जीवन की घाटी नृत्न  
 अधकार था जहाँ घोर, विद्युत् प्रकाश से  
 जगमग अब वह लगती नर नक्षत्र लास सी ।  
 यहाँ मनस्वा मानव अथक निरीक्षण पथ में  
 उद्घाटित कर मृग प्रकृति के रहस्य बक्ष्य का,  
 भौतिक जग के गहन रहस्यों को अधिस्त कर  
 जुटा रहे मानव मात्रों के उपादान नर ।  
 किंतु मृत्यु के दारुण पक्षों की द्वायाएँ  
 उन्हें प्रस्त कर रहीं, स्वयं से विंचित उनसे  
 रचना-श्रम का ज्ञान, अमृत का बदल गरल में ।  
 आन नाश की मुट्टी में उदी विपश सृजन ।

### स्वदूत

यहाँ जितना अभी है अब वैज्ञानिक युग में ।  
 पर आर है महत् मनुज का रचना मलय,  
 और दूसरी आर उहत् साइ अभाय की  
 मध्य गुणों के अभिराषों से भरी भयानक  
 रुद्धि गति जापण क कदम का मुह राय —  
 मानवता क उर में पड़ी घृणित दगर मा ।  
 जहाँ बदलता मानव का भतर चाह म  
 क्षतिजस पर अपना गीमात्रों के मक्ष्य का ।

## स्मरती

वह दरा, समतल प्रमार पैला दग सम्मुग  
 जहा द्वाध नन-माम नगर, गह, हम्पे, राजपथ  
 मण्मय प्रतिमातो स विगल विगत युगो व,  
 उपनतन व माग विप स यस्नयस्न त  
 मनुन सभ्यता री तापो स धरित अरति पर  
 ज्यो मिटते पन्निद्ध शप हो रात पवित्र व !  
 वह दरां म गडित रज धरा रा मानम  
 आन घृणित स्पर्धाआ, म्वाथो स आतंरिन,—  
 घनीभूत हातो विनाश री भीषण द्वाया  
 जन भू व मुग पर विपाद नगर्य से भगी !  
 मेंडरा रहे विहग भीम धूमार सितिज मे,  
 लगता हरित प्रमार मिधु सा आदालित अन,  
 आवेशा से उद्वलित उद्भात नागरिक  
 न य युगातर का आवाहन करते भू पर !

[ गान ]

पुरुष स्वर

एक वृत्त हुआ शप  
 वृत्त शप, वृत्त शीप !  
 जन मन में समेर भर  
 नन युग करता प्रवेश !

वृत्त शीप !

## मन्त्री स्वर

युग विगत प्रहर घोर  
छाया तम आर छोर,  
दूर अभी दूर भार  
दिग् कपित भू प्रदेश !

वृत्त शप !

## पुष्प स्वर

पावक का लोफ अमर  
आकुल करता अतर,  
मत्यु धूम रहा घहर  
गरजता क्षितिज आशप !

वृत्त शप !

## स्त्री स्वर

निद्रा से यतान नयन  
स्मृतिया मे उपचतन,  
मानस में युग स्पदन  
प्राणा मे नरात्मप !

वृत्त शप !

## पुष्प स्वर

मिहर रह गूढम भुवन  
जावन रज तर चतन,  
धरते नर मज्ज तरण  
मिष्णे का अन्य वतरा !

वृत्त शप !

### तव पुष्प

नाति विप्लवो भू युद्धा, गह सघनो म  
 प्रस्त, क्षुब्ध, युग आदातिन अत्र धरा ततना,  
 भूमि त्रय शत दाइ रह हों भू मागम म ।  
 नया दारुण युग आया तिमन विनाश का ।  
 अस्त हा रह सरुतिया न साध रत्न म्मित,  
 भू लुटित स्मृति शिखर यातिमुग आशो क  
 नष्ट भद्र सगठन सचता मानव मन न ।  
 धम नाति आचार गिर रह आध मुंह हा  
 हसमुग तम से भर अतन कामना रूप म ।  
 बुद्धि भात जीवन न आवशा से चेवल  
 भाग रहा मन गहनगत क चलते भर म  
 मग मराचिमा पाडित, चल जल छाया मोहित ।

### मन्त्री स्वर

सिंहासन लुट रह टूटते छत्र रत्न प्रभ  
 चलित तारना से भू रा पर रूति रीति न  
 दुर्ग तह रह,—आदा भात विश्वासा क गट  
 भिल्ली भडत । उवल पुथल मच रहा धरा क  
 जीवन प्राणण म, दारुण भम्भा कपित चा ।  
 धधर रह उपचतन के शत ज्वालामुस गिरि  
 युग यग के आवशा की लपटें नसर कर,  
 भीषण त्रायात्रा से उद्धतित जन मन अत्र ।

परिवर्तित हा रही वास्तविम्बना जगती की  
 नव रूपों म प्रकट हा रहा जावन शाश्वत,  
 विश्व विवर्तन मा धारण करने म सक्षम ।  
 शाश्वत तथा अनित्य विराधा तरु नहा दा,  
 एव सत्य ही विविध स्वरूपा म अताहत,  
 परिवर्तन की अविच्छिन्नता ही शाश्वत है,  
 भूत भविष्यत् वतमान है गुणित विसम ।  
 जीवन-मन्त्रिय दश काल म विस्तृत शाश्वत,  
 सक्रिय आज परिस्थितियों की रद्द चेतना  
 यहिर्दृष्टि विज्ञानों स नव बल संचय कर ।  
 बदल रहा जीवन यथाऽ, मानस पदाद्य अत्र,—  
 तत्र मानस मूल्या म कुसुमित सामाविम्बना  
 विश्व विपमताओं में नवल समत्व भर रहा ।

### स्त्री स्वर

महत् प्रयाग धग जावन में भाव हा रहै  
 एव तृहद् भू भाग रत्न रदम से उटकर,  
 दय, निराशा क्षधा, ताप क घृणित नरक क  
 अधरार मा तार विपमता मा रारा मे  
 रग मुक्त हा, अमानुषा मत्तो म्भयो की  
 रीढ़ तूरा कर, मध्ययुगो का जावन जतर  
 परपगथा वा सीनाए द्विज भित कर,  
 भू जीवन की मृत प्रेरणा त उन्नतित  
 या समत्व सा धरा स्वप्न निमाण कर रहा  
 तत्र धन की मगटित लौह मरुत्व शक्ति म ।

## दूमरा म्वर

मुनि मे गणनाता ह म्म गग मग्ग वा,  
म्ह वट हा गय मग्ग भावताश म ।

[ वाता ता उव । २ ]

ता प्रसार क दाण मग्ग थाव मामा  
दातो क्षत्रा पर हमरा गयत वृम्भा ।  
म्ह, वातो सा धम म्मग सा जाणामन द,  
सप्रति भय, अन्याय यावताणे महा सा  
वाधित करने उताहा वहुसिधि आतस्ति म्म  
वडि विवेक विहान बना मानमर्त्रीरी सा —  
नूर सघ स्वायो सा साधन बना मनुच सा ।  
और दूमर स्ति शून्य म पण मार कर  
उपर ही उपर उडने ह थाति अध हा,  
म्ह पलायन मिसा बना का अरिनात म ।  
दिय स्वाति के पापी रटते प्याम तातर  
भायी के आशाश कुमुम निच चु मे लिय,  
कम्हला उडते वा जीवन क शात ताप से ।

## म्री म्वर

सच है, यह दिन के प्रशाश सा स्वय स्पष्ट है ।  
य दाना ही मृत् पलायन वतमान स ।  
सत्य भविष्यत् नहा भूतमय वतमान है  
वही भविष्यत् होगा जिसे बनाएंग हम ।  
वतमान, जा तिर अतात मी परपरा का  
मृत रूप है, उहा सत्य है, उही प्रगति सा  
युग विनास का मापदंड है,—यह अज्ञान्य है ।  
जैसा मन कहा पण,—हम जा चीते है,  
हम्हा सत्य ह । वतमान क्षण क पुट में ही  
हमें वाधना हागा जीवन के शाश्वत का ।

[ वरतल ध्वनि ]

## दूसरा स्वर

यही मूल्य है। मुना उधुआ, हमका दाना  
 पलायनों में लड़ना हागा, वा भविष्य क  
 मृग मरु म भटकाते मनसा। मृत प्रगति क  
 नहा शुष्क सामाजिकता म, वा न्त शमित  
 नित नरीन आरशा में उत्तचित रहता।  
 मानव मूल्यों का है सात मनुष्य क भीतर,  
 जीवन मयादा म विकसित महत्त्व यन्त्रिम।  
 अस्थायी है जो जीवन क मूल्य उहिगत  
 मिद्ध कर दिया यह युग क इतिहास न धर  
 यात्रिक, जन तात्रिक प्रयाग उरु कर जन मन में।

## तृतीय स्वर

अल्प समय जा हम मस्मृति के अप्रदूत हैं,  
 मानवता के ज्योति शिखा बाहर युग युग क—  
 गहन ममस्या आन हमार निकट उपस्थित  
 जैसे हम अयुग क कर स छान अमृत-धनु  
 दनों क हित करें सुरक्षित, युग गगा का  
 मुधा धार का छिपा श्रवण पुट में फिर अपने  
 दरा-श का मानव वैभव मज्जित निममें।  
 यह गात्र अधिहार मत्त में रहा हमारा  
 हम जा वात प्रवृद्ध, अल्प समय का उग क,  
 रहन करें हम धरती पर मदग म्यग का,  
 मानव मूल्यों की मयादा का विकसित कर।  
 आन जगत क सम्मुख मनुष्य चरित प्रान यह  
 माध्य और माध्या ही उम मरण ममस्मृति।

## चतुर्थ स्वर

मातृहिता पूरा न कर द व्यक्ति व्यक्ति की  
 शक्तता, मकल्य चक्ति, उद्यत निरक्ष का



ऋग्वेद पढ़िए हमें तो जो गीत मानम है  
 हमें मग्निये हा कर अप तत्पर रहता है  
 निज महान् शक्ति व लिंग, भू मंगल हित ।  
 हमें था, तो चरित है अस्मितता है,  
 हमें ही सत्य है शप यथ भूभार मात्र है,—  
 क्याकि नहीं परिणित व यापर भू चरित म,  
 विश्व मध्यता ही गति म मान मग्निये ही  
 मूर्ध्म, रहस्यभर शक्ति चरित विनाम मर्णिये ।

### प्रथम स्वर

मुझे बालन में अप मैं आरुह्यत हा गया ।  
 मित्रा, मृत्या का उद्धार हमें करेगा अप  
 मुन यति व भीतर उनका स्थापित कर दिये ।  
 हमें विशिष्ट मनुष्य शक्ति का प्रतिभा व  
 पर्या में उड़ सकते मन व अतनभ म  
 रगगा सा चर्चा उल्ल मान मूल्यो का  
 विर अनादि से अतहित स्मित छायापथ में ।  
 अल्प समय कुछ ही हम कर करने अद्भुत  
 उस अतमलिला धारा म अंतश्चक्र ।—  
 गुरुतम युग दायित्व हमारे पशु वधों पर  
 आज आ पडा, हम जा भू व भारवाह है,  
 निस्तिल विश्व जीवन चिन्ता, सौंदर्य बोध व  
 निरवधि सागर का मथन कर वतमान के  
 क्षौर फन से मानव मृत्या की मयाग  
 सार रूप में संचित कर, उस जटिल सत्य का  
 निज विश्व सम्मत स्वतंत्र संकल्प शक्ति स  
 सृजन कर्म म परिणत करना हमारा शास्त्र ।—  
 विरत प्रवारा भावावशा से हत, मूर्च्छित  
 शब्द शक्ति का नवाडार कर नव मृत्या का  
 उसे प्रीति धना माजत रति से सँवार कर  
 मान व भीतर करना है हम प्रतिष्ठित ।—  
 बहिरतर का शुष्क समन्वय भ्रम है कल ।

## तीसरा स्वर

मेमा कुसुमित शब्द जाल है । सुदर वाग्दल ।

### स्त्री स्वर

कायरता से रचना है प्रतिभावानों का ।  
कायरता से भ्रस्त रहा इतिहास मनुष्य का,  
कायरता से विमुक्त हुआ प्रतियुग में मानव  
निज अंतर सत्या से, सत्ता का पुकार से ।  
वर्तमान में दृष्ट रहस्य—वहते अतीत का  
मृत रूप साप्रत क्षण का, उगम प्रति जाग्रत,  
हमारा निज निज स्थिति से पुन स्वधर्म के लिए  
आत्म यज्ञ में पूर्णाहुति देनी है—

### तीसरा स्वर

उमरा

लाभ यज्ञ कह, नव मूल्या का अन्विवाह बन ।  
सामान्यता विगल न दे विच वर्तमान के  
सत्तों के प्रति जाग्रत बोद्धि नग व्यक्ति का  
जो छाया सा काप रहा जन-भय से मूर्च्छित,  
सावधान रहना है हमारा—

### एक स्वर

क्या चरन हा ?

### तीसरा स्वर

माभूहिक्ता कुतल न न विस्मय भनीन की  
परपरायो के हम परमाणु को का,  
हमारा रहना है मनस्य मगति—

## म्या स्वर

शुभ रहा ।

## ताम्रग स्वर

हमने अपन ही भीतर म योग जीवता सा  
चटिल जाल है तुना पहता स निज, निमन  
स्वर्णम मयादाआ र तात घान में  
बदा ह हम आप स्वय कर्ष उम्ना है जा  
श्याम मात्र म—निमम श्यामा म दुःखी क्षण  
जगमग कर उठने, शशि सिग्णा मे सम्भाहित ।  
भाय जगत् यह मूर यति का मृत्म गहन, तत,  
जा रि अमदर क्षण सा भी मुद्र कर दता  
निज प्राणों सा रस उडल कर अरातन म ।  
हम, सग, नय प्रयाग कर रह मानन मन म ।

## स्त्री स्वर

अभ्य मत करा, बंद करा—

## एक स्वर

वह सच कहता ह ।

## तोमरा स्वर

यह निशप अधिभार सदा से रहा हमारा  
हम ता तन प्राण अल्प सरयफ ह जग क  
हम नन युग सदश बहन कर अध धरा म  
चरनाहा से जनभडा का रहे हास्ते  
मानन मृत्या नी नन मयादा धापित कर ।  
जन धरता म फलती नहीं सुनहती संसृति,  
वह उगती कुल्ल बुद्धिजातिया क मानस म,  
स्तर ना न्यारी हँसती न्या सरानरा म ।

## एक स्वर

इस चुप करो !

## दूसरा स्वर

इसे पकड़ ला, मत जान दा !

## स्थी स्वर

यह काई भन्धिया, गुप्तचर लगता निश्चय !

[ स्वर वागवत् ]

## स्वतूत

यदि फूलों की रक्त शिराँ उतेजित हों  
तो उनर मुग चमक सरेंग अभी मूय म ?  
व निरस्त कर पायेंग धरती क तम का ?  
हासा मुग सम्कारा का उमाद मात्र यह !  
तकनाल स यदि विक्रमित हाता मानर मन  
ता न पनपता तर-जीवन आकाश लता मे ?  
महत भार ही मान विभूषण मानर मन के  
मुहट पुष्प ही पहना सकते तर शिरगों का !

## स्वदती

उधर चले अर गेवर, हिम प्रार्चीर पार कर,  
दगे मनयज सुगभित स्वाणिम शम्य भूमि का,  
मटा विश्व क मुग्ध हगो का स्वप्न ग्हा ता !

## स्वतन

पलर मागते पट्टा गय ला अपन मन की  
अभिमत भूँर,—मरल रग कर परतल लाता !

## स्मृतता

यहा, दागना शम्भु हरि भू मरान मणि-गी,  
मान गुंजरित स लगते गृह कुच गगर धा  
अमर विश्व गायक का गग मर लहरी म ।  
यहा महत् सागरतिन सारण त म ल गहा  
मानरीय गरिमा म अतिरम रर म युग का  
हृदय स्पण ररा म पाग्य मणि मा गक्ष्य ।—  
ना पशु तेन म उटा मनुच रा मागम तप पर  
भाउगा स मत्य गान मयम र मर पर,  
साम्य चतना स विज विम्बित रगता तग रा ।

## स्मृतत

स्मृति पट पर नर आभा रगाओ म अस्ति  
प्रमत् हआ गुग पुर्य अभी इस पुगय भूमि में  
जा अनादि स त्वा रा प्रिय रहा विश्व में ।  
जिसकी मनागुहाण जनश्रद्धा से दीपित  
जावन पावन रहा, अरिगा तम स रचित  
उपचवन निश्रुतन स्तर तक आलास्ति हा ।  
यहा अमत् पर सत् री तम पर सतत ज्याति री  
तथा मत्यु पर विजय हुं अमत्तर की महत् ।—

## स्मृतता

यहा पक से याति पन्न सा उठरर विहेसा  
युग मानर यह लार सत्य से अनुप्राणित हा  
संयम तप से दीप्त, आत्म स्मित सत्तचार री  
रजत शिखा रर म धर ररर हिंस जगत् रा  
महत् साय्य अनुरूप द गया जा नर साधन,  
प्रेम अश्र स जीत घृणा रा,—स्थितप्रज्ञ मन ।  
यदा स हत जजर भू पर विश्व त्रय हित  
सबल अहिंसा व प्रयाग कर जाप्रत् सनिय  
सामूहिक स्तर पर,—जन मन की द्रप मुक्त रर ।

आत्म शक्ति से जूझ सगठित पशुवन से वह  
 प्रवृत्तियों के अध प्रयोगों की मन्त्रों में  
 रहा अडिग, चतन परत का नैतिक उल्लेख ।  
 सत है, स्पर्णधरा यह उसके अथक यत्न में  
 युग युग के पाशों में जीवन मक्त हा पुन  
 मानव गौरव वहन कर रही, विषय मुकुट धन  
 कीति स्तम्भ सी उठ उसके तप आत्म त्याग की ।

### स्मरदूत

वह देगा नव जावन का सगर हा रहा  
 जन धामा में आता, मृता कर्मों में रत ना ।  
 नव धर्मत में स्पर्ण भवर्तित कृतों से हँस  
 दिक् कुमुदित जन राम उठ रहे, श्री मुग्ध कृतित ।  
 नव आशा आकाश में मग्नरित जन मन अत्र  
 नव्य चतना में दापित, आश्रमन्, उल्लसित ।  
 हृष्ट पुष्ट तन शत कर पद श्रमदान कर रहे  
 नव जीवन निमाण हतु, जन मगन प्ररित ।

### स्मरदूती

आ पर निमम गम्हारों से पीड़ित यह भू ।  
 कर्ण दृश्य दगा यह कँठिन मानवता का,  
 युग युग के शापों विष्णुसत्तों में कालित जन  
 दैत्य दुःख के पत्र में लगते जावन-मत ॥  
 मिट्टी के गडहरी घरोदों में पुनित न  
 रोग रह के गीढ़ हान चौरा कदम में ।  
 शीत ताप आधी पानी में जन-कुमुदों में  
 क्षण भर गिलकर, कम्हलाकर, आत्मि निमग का  
 विदग्धा का अपिन, विष्टर नियति पराजिता ।

### स्मरदूत

पर दगा, मरुधन में हँसता हस्ति दूत में  
 धीर माथ धाम नग रह जीरा नान,

॥ शिवाय म विष्णु पु ॥ ॥ मम्मोना म,—  
 मन्थ शील मभराग र उरर रिदुज य  
 लार वतना म्पगो, गला म म्पुपागिा ।  
 मष विस्दिा यहा हा म्पा माग ताग  
 म्पि म्पभा रीप्य म्पिा म् क भागो म,  
 म्प माउ सत्ता क अयया म य म्पगिा,  
 मधुपना म म्पजित जा रीरा राय म ।  
 धन्य म्पहिमर भूमि मत्य पर प्राण म्पिगिा,  
 मानयाय माधन स म्पभ जहा जा म्पगन् ।  
 विष्णु शाति ममा य जागण म् क म्पमी  
 मरल सयमित चायन चिनरा म्प पर निर्भर ।  
 गृह धधा उद्यागा म तम्पुओ म्पुओ म  
 म्पनते सम्पुन म्पुन तुष्प जा जीवन पट जा ।  
 लाक चागरण क म्पार साधिर म्पयल य  
 रजत सिरीट म्पग पिमय मानयता क—  
 रक्त म्पच चिर शाति नाति क म्पमदूत म्प ।  
 म्पिधनित म्पनर म् क म्पगल क गीता म्  
 पुण्य धरा क म्पाम नगर म्पानन, नम्प निभर ।

[ विश्व गाति द्योतर वाद्य मगीत ]

### मगल गान

गाओ जन मगल ह ।  
 शम्य हरित रह मन्त  
 सृणिम भु अचल ह ।

शात रहे नील गगन  
 शात सिध वारि गहन,  
 शाति दूत हा दिशि क्षण  
 विश्व शाति शतदल ह ।

सृजन रम निरत जगत  
 घृणा द्वेष स्वार्थ विगत,  
 प्रीति प्रथित हृदय प्रणत,

पूजित हा श्रम फल है ।

भाति रहित हा जन मन,  
 वैभव स्मित जग जीवन,  
 गोभा अपलक लान,

कमुमित दिड मडल है ।

शात हा समर प्रमाद  
 शात मनुज का विपाद,  
 शात निगिन तरंगान,

शाति स्वर्ग भूतल है ।

### म्वद्रूत

चला, चले आँचागिर कट्टों में भी क्षण भर,  
 घरी रग्निया वहा उगलती धूम निरतर  
 धूमिल कर मानर भागी के विर क्षितिन का ।  
 वहा उमड़ते विघ्ननाति व प्रलय बलाहर  
 महायुद्ध की लपटों पर शत धार चरमन  
 तथा शात करने भू उर की मूर अग्नि का ।

### म्वन्ती

यह दगा कुद्ध विभ्रुत दशों व अधिपायक  
 विघ्न शाति व लिए यहाँ ममयत हुए हैं,  
 वि तातुर भुग, कृति भ, रगाकित मन्तर ।  
 मान रह मन ही मान, दर, विघ्न में मंत्रति  
 शाति हमार अधो में म्थापित हा मन्ती ।  
 किन्तु प्यथ मय । विधि का ज्ञान क्या म्भारत है ।



११ शाभा म स्त्रिय पू। जा मग्गाती म,—  
 मग्ग णि। मग्गाती म उर विह्व म  
 लार चाता मग्गा, गती म अग्गि।  
 मग्ग विह्वि। मग्गो हा र्हा मार जात  
 ग्गि मग्गा गि व धि। भु र भागा म,  
 मग्ग मग्ग मग्गा र मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग,  
 मग्गुता मग्गुता जा जीता मग्ग म ।  
 धन्व णि। मग्ग मग्ग मग्ग पर प्राण मग्गि,  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 विह्व शा। मग्गी मग्ग मग्ग, भु मग्गी  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 गृह मग्ग उरागा मग्ग मग्ग मग्गी म  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 लार मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग —  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग ।

[ विह्व गति धीतर वाच मग्गात ]

### मग्ग मग्ग

मग्गी, जन मग्ग ह ।  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग  
 मग्गी मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग

मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग,  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग  
 मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग मग्ग

सृजना के मर्म निरता जगत्  
घृणा द्वेष स्वार्थ विगत,  
प्रीति प्रथित हृदय प्रणत,

पृथित हा श्रम फल है ।

भाति रहित हा जन मन,  
वैभवं स्मित जग जावन,  
शान्ता अपलक लाचन,

कुमुमित दिव मडल है ।

शात हा ममर प्रमाद  
शात मनुच का विपाद,  
शात निमित्त तर्कवाद,

शाति स्वर्ग भूतन है ।

### स्वदूत

रवा, तले आँखागिर कट्टों में भी क्षण भर,  
घनी रक्षितया जहा उगतनी धूम निरंतर  
धूमिरा सर मानर भारी क विरे क्षितित का ।  
वहा उमड़ते विस्फुरति क प्रलय बलाहर  
महाकुड का लपटों पर शात धार प्रग्मने  
तथा शात रगे भू उर की घर अग्नि का ।

### स्मृती

यह दग्ध रुद्ध विभ्रुत रगों क अधिनायक  
विष्य शाति क लिए यहाँ ममन हूँ है,  
शितातुर मुग कृति भू, रगाकित ममन ।  
गात यह का ही मा, र, विष्य में मप्रति  
शाति हमार अगों म स्थापित हा मरती ।  
किन्तु व्यथ मर । विधि का बात क्या मरत है ।

वृद्ध भी विणय रहा पर मरना जानि मिनन यह,  
 चमा हाता आया मदा हुआ चमा ही ।  
 रिग विडवाया म मर ममय ना गया,  
 स्वाय त्याग रग ना रीग यहा है उत ?  
 आन गभार ममस्या है भू उन र मभुग  
 यद नहीं ना क्या र तत्पर जानि क लि ?

### मृत

पर दगा रह रिग जानि री रत जिगा मा  
 ना सय सैग ह हताश रह नहा ननि भी ।  
 मध्यमाग ना पविन, तत्पर मटा हिता म,  
 परशालि ना पापर महर्षिन ना घापर  
 घृणा द्वप म विमग प्रमग यग द्रप भी री  
 रिगन वृश तन निज महदासासा उन्नत,  
 चप न रहगा रह जृम्गा धम रक ल,  
 जन मंगल ना लाय न्याय ना पत्त ग्रहण र,  
 निज नतिर पल डान सत्य ना विनय क लि ।

### मृती

सच रहते दिग्भात जगत ना दीप सभ रह  
 उसर ऊपर वर हस्त है लोके पुरप ना ।  
 आह धार शिनिगे म आन रैटा भू चान,  
 घृणा द्वप म्पधा क दारुण दुग मगटित,  
 हिंस प्रचारा क भागर रीत्कार भर रह  
 उम मता कट तकें पादा में भनभन र ।  
 रग र लते रह रह अरसरवादी गिरगिट  
 रते अध पठित दादुर अपना अपना मत  
 उद्धल घणित जीवन वर्दम म रठ फलार ।  
 आदेशा क भग लाट, फुफारे भर-भर  
 जन मन ना रगते विषाक फन खाल भयकर  
 रड वासना क घाघ रैग, सरीमृप  
 रग रह निश्चतन तम म धग नरक क ।

स्ति, गति आगर, अधविद्यास अनसो  
 पर दृष्टप्राते विभीन गेदु उरुभ्ये  
 गहन अरगी ग्राहा म पड जन-मन का !  
 भूल-भृग विल्लाते रूपन चानन पत्र,  
 प्याम प्याम स्मर दग्ध, स्नाथुआ क तण पिनर,  
 महाद्गम म जावन तम का भार टा रहा  
 पशुओं क स्तर पर प्रवृत्तिर्वासा मानर गिर ॥

### स्वतूत

अह, मन म अस्माद गिर रहा तम स्पाट गा  
 युग मानर का अध नियति का दृश्य रग र ।  
 रह दगा, री-रूप उटता जनि मट लिंगतर  
 विद्युत् आगतो से । विस्त प्रयोग हा रह  
 प री पर जावन नाशर परमाणु गति क ।  
 मनाआ का तुमुन घाप मुन पड़ता तुमरा ?  
 लोह पगा म हिल हिन उटता प्रमन धगतन,  
 प्रतिध्वनि हा रही मत्यु री राप जिशा म,  
 भाषण गण यानो म मंत्रित उदर गगन का,  
 उगत रहा महार अग्नि यमना का स्तु विप  
 मत्यु धूल उड़ रही धग में विद्युत् मन्त्रिय ।  
 महाप्रलय री दारण द्वायाण मन्त्रना  
 वैधियार्ती क आगतो म लाट धग पर,  
 विस्फुट का विक्र घापणा फटा का अर  
 विस्फाटन सी, रद श्याम तानर क मुह म ।  
 रता, लोट हम जने सुगे री द्याया में फिर,  
 रगे, राट महत् रम हा तम न रहा  
 मातरता क मरत्ता हिन टा स्तर म ।

{ नरत ब्राह्मण गूण वाच मन्त्र }

अहा, मास्तुर्गो पर उड़ पर हम दगा का  
 तपाम्बुधि ने फटा रग फिर तम गतिमय ।

## स्मदूती

पा पट चुड़ी ! सुहला क्षण युग की द्वाभा का  
 माहित करता चित्त, स्पहनी भ्रंशग की  
 स्वर-मगति में सूक्ष्म ततनातप गा गुंफित !  
 मान लालिमा ताक रक्त शतदल सा प्रहमित  
 खाल रहा दल पर दल —निखिल दिगत पहावित !  
 खलित प्रखाला क पयत स रड हिम शिरार !  
 रक्त पीत मित नाल रमल तग स्वप्न वृत पर  
 सस्मित पलकें खाल रहे निव अध निर्मीलित !  
 जाग रहे फूला क खज्ञाना पर साय  
 प्रेम मग्ध रदी मधुकर, उमन गुंजन भर !  
 पारिजात मदार लताएँ लगीं मिहरन  
 मग्धाञ्जा सा हरि चंदन तरआ से लिपटी,—  
 खिलन लग अशाक पदाघाता की स्मति स,  
 दनदार क शिरार हो उठ, ला, स्वरणप्रभ !  
 निश्चय दना क सँग रहता स्वग निरतर  
 तपाभूमि की सृजन भूमि म बदल अलाङ्किक !  
 सुना, जागरण गात गा रहे खतालिख सुर,  
 कमला का अजलि भर, जा प्रतिमान सृष्टि के !

[ प्रभात वाङ्मि सगात तथा सङ्गान ]

रक्त कमल, श्वेत कमल  
 सुल याति पलक खल !

रक्त कमल जीवन स्मित  
 श्वेत कमल शाति जनित,  
 खाल रहे रश्मि स्फुरित  
 मानम म खाला दल !

नील रमल श्रद्धा नत,  
 स्वरण कमल भक्ति प्रणत,  
 कदम म खिल सतत,  
 प्रीति मधुर अतस्तल !

अमित सुरभि रही निरर,  
 गूँज उठ लाफ़ निरर,  
 जाग उठा जानन सर  
 स्वणिम लहरें उड्डल ।

नई चेतना हिलार,  
 शाभा न्दायी अड्डार,  
 होन का नया भार  
 गाथा सुर, जन मगल ।

### स्वदूत

दरसा, फ़ौन गड़ा हिम अउल म वह तापम  
 आराहण करता मन क दुगम गिगग पर  
 जीवा की मधुभूमि छाड़ कर कैम मानव  
 यहाँ पहुँच पाया ? दसों क हित का रक्षित ।  
 वह क्या काइ प्रेमी पागल अथवा माधर,  
 या वह जीवन द्रष्टा नाई ऊपाराही ?  
 अन्न प्राण मन क प्रिय भुजना का अतिरुम कर  
 अधिमा क शिगग पर का अटका विशरु सा,—  
 हाथ, अगभर वृद्धाथा का वीति का अन्न जन ।

### स्वदूती

आ, वह काइ जान दष्टि कवि लगना निरर,  
 लार प्रम क महत् प्यय म प्रगति हो का  
 गूँय मनस म लग रहा मानव भविष्य का,  
 रमर्ण मुकुर सा यति स्फुगित का मतागगन म ।  
 रूपलर धतदष्टि महत् स्वप्नों का विम्मित  
 पार कर रहा रहम भविष्यत् का स्वणिम उभ,  
 दूँपित अलकों पर उदभा चान्दय निग्या  
 साम्य धन पुग, तार प्रवनु, फल्यता गिहग यह  
 मरुति मूर्जीयत मा म मृदुसग, अनि जना ।

मृत्तन प्राण वह विगिन अमभर मभर उमरा ।  
 गता ध्यान म सु॥ स्वगत भाषण रगा वह  
 अध स्वगे म — 'पारम यति, स्वमा म पाडिन '

[ १३ ज गूता र्गि व मभाष ]

### ज्ञान द्रष्टा

यति ममाज ममात्र यति — रगा रिडवा ।  
 साध्व प्रथम या साधन — रगा तर उत ह ।  
 आरता म एफ एरना म 'पारता,—  
 राटर भातर शर चात मर ररत रागद्वत ।  
 यात्रिस् राडिस् तर गिन दश । र क्षपस्  
 भात वडि रा प्रत ममम्या । मानर री,  
 जा यरण्य रादन रता यग र मानय म  
 निचन रडहर म भिना मा भास भास रर ।

मत्य एफ ह यति समात्र, अर एफ जइ  
 चतन राहर भीतर सन निम पर अरलविन ।  
 आरतन गति म रिगध गग र अनुप्राणिन,  
 विश्व सचरण ताता का उपम्य सतुलित ।

### स्वदत्त

मानस मन चता यग मानय र भातर ।

### ज्ञान द्रष्टा

दरारहा म परर उन गया ररफ उन गया ।  
 बरफ उन गया रराररर जमरर दुग युग रा  
 मानय रा चतय शिगर — नारन, एरारा  
 निप्त्रिय तारस चांन मुत — सन पररफ उन गया ॥  
 रास मात्र जड शातिल — ताप प्रमाश नहा कड  
 डे, बुनं हुण अगारा म पाणा रा  
 ताप गहा मन रा चातन प्रमाश नहा अर ।

चक्रात् परात् चान्तरात् मारी गतिया री,  
 चम फलक पर फलक गतान् उपत रक्त र,  
 अद्रहाम भग्ने जा निम्बर नाम फल र  
 महासाय रतीता र अयणप परगतन ।  
 तमर तमर चिल्ला उदता स्त्रियो प्रकाश री  
 मतरग न्यायामामा री चक्रात्पथ म  
 प्रतियनित ह। मन शिवात्ता पर विर विद्रित ।

### स्मृत्नी

आत्म विपत्तयेन र्क्ति शान् र्शन री ।

### शान् द्रष्टा

राग विरत, विराण शय री मृत रूप यह  
 निरामन्त निष्कण्ठ, शक्ति री रूप सा र्ग्या,  
 चान्न प्रत्याग्यानी र कृण अस्त्रि साध मा  
 नति नेति री आत्म विपथा री दुग्म गत् ।  
 मृत गय प्रेरणा सान् राहर भातर र  
 गीतल, हिम शान्तेन चान्न री चन् समाधि यत् ।  
 मद् शन्य भैरव नाश्रता महागूय री  
 पर र्मसा महामृत्यु र उदत् पत् मा ।  
 र्क्ति र्वाति र्जन हाय, जेन गया र्जन धरणा री  
 रूप र्ग्य र्ग्य र्ग्य मगर चान्न उरर मा,—  
 प्राणो र मारम्भ पयो म मत् गचरिति ॥

### स्मृत्नी

मध्य र्ग्या र चन् निपर, चान्न पत्ता र  
 र्क्ति रर दा मत् प्रगति चान्न र्शिम री ।

### शान् द्रष्टा

विश्व विरर पर चान्न र्जीवा र्क्ति र्क्ति  
 रर प। मत्ता र्दत्ता विरन्त र्दयात्तो मा



हसती रहा ७ प्राणा ही ममर हरियारा  
 लाट रूपहटा लहरा म धरता ही नव पर ।  
 प्रणय गति गानी ७ मधुरग, मधु अरुगे म  
 मरला सा मग ७म भम गचित पैगा म  
 रू ७ पानी पिरी मोगिन यात्रा पर उड़  
 मृता प्रणा गग अमा सिद्ध ना म ॥

### मरती

विद्या आर अविद्या म संतुलन गा गया ।

[ भारतापर गान्धिमगान ]

### मात द्रष्टा

आह म प्राणा सा स्पदित ताप चाहिए  
 चीन ही नमन सा भासायुम चाहिए  
 हरित प्राण उल्लाम म रहित इम युग-युग के  
 पतभारा न निवन म्ण म्गल दूँट सा  
 गध गुत्तरित स कसुमित मधमाम चाहिए ।  
 गला सन सा इमर भरमाउन तुपार सा  
 मिटा सन भाषण विराग भारी विपा को,  
 आलाकित रर सन घर नैराय तिमिर का  
 जन् है जा इसे शेत म्गल हास्य से ॥  
 हाय सा गया शुभ तमस में धरा शिगर उठ  
 हाय मा गया शन्य अतद्रा में जाग्रत मन,  
 मरु गये जीहन मरुप म चरण वद्वि के,  
 देशमाल स पर, नास्ति म, म ७ लाचन  
 स्वप्नहीन तद्रा म न सुल गये निर्निमिप —  
 यानानस्थित स्थिर निष्प अरूप प्रतावित ॥  
 आत्म नग्न नर, रिक्त दह मन न नमन स,  
 अमल धात पट सा - धुल गये प्रवृत्ति के सन रँग ।

[ निजन विपापण वादि र मगीत ]

## स्वदूत

नीदिर मर में लुप्त हा गया उत्स भाव रा ।

### रात द्रष्टा

वस इन्द्रियों न स्वणिम पर म लिपटाआ  
रूप गध रम स भक्त भूषण पहनाआ,  
इमे सुले द्वारों से, भाव पगों म गुणित,  
जन भू के विस्तृत पथ पर चलना सिगनाआ ।  
इस ऊर्ध्व नम के प्रकाश को आत्मसात् कर  
जन म जीवन म मूर्तित करना उतलाआ ।  
जिमम फिर चन सरे अचल, स्वणिम सातों में  
भर भर कर रह सरे रंग मे नर गति पाकर  
शाभा में हा द्रवित मूत्र प्राणों की जडिमा  
लोट लिपट भरन में हा नर भाव प्रगोहित ।

[ जानना-गम मूत्र वान्नि मयाव ]

## स्वदूती

महत् समन्वय आज चाहिए युग मानर रा  
दश मनुज पशु विमम हा अत मयाचित ।

### रात द्रष्टा

रग रहा मैं गड़ा धरा नना शिगर पर  
युग प्रभात नर ज म ले रहा शिर क्षितिज में,  
मरण शुभ धर रमि-मुकुट भगव भाल पर ।  
युग-युग म म्मभित निरुद्ध आत्मसा, म्मार्थगत  
भातर क अज्यात्म वाच्य का याति मुग्ध कर ।

द्रवित हा रहा शक्तियों का सैन्य मयाता  
गिरह मूत्र जा रहा विरुद्ध धरा म हासर,  
चाप म उग्र उट ना क रहें शय पर ।

फूट रह गत रात विना प्राणा म मुगारित  
धरती का विन प्रीति गरिा जोंहा म भग्नी ।

शात ही रह मानव के अभिगाप युगा न,  
पुन मिल रह विन्दुइ तड़ चना, तीरा मन,  
मानव की आत्मा म नव प्राणा म इदित ।  
एक विन-जन-जीवा निनाय,— समुधरा हा  
मनुज मत्य का अमर मृति विवित प्रतीर ह  
अमित नारायणमयि का शासन नारनमयि जा ।  
एक छार चैतय विरतन, रमि पग म्मित  
भागों का सतरैंग प्रसाग उग्माता अरिगत,

गह्य दूसरा द्वार अरुत अतरत तड़ तम है,  
धारण करता जा अपन परिहार गर्भ म  
जम मरण भय तीरा नम सुरा दुस क स्पदन ।  
दर रह मी मुक धरा क अतन गभ से  
अग्नि स्तभ उठ रहा तप्त हमाम शैल सा,—  
महा आगमन का सूचक यह च्योति पत्र क्षण ।

[ यगांतर सूचक मधुर भाषण वाग्नि गगात ]

### स्वदत्त

निश्चय यह मानव भविष्य द्रष्टा नव युग कवि,  
भत भविष्यन् क पुलिना पर बोध रहा जा  
स्वप्न पग धरित भाव सेतु, शत एड्र धनुष स्मित —  
गरज रहा नाच उद्वलित जन यग सागर ।

[ तीव्रतर वाग्नि गगीत ]

### स्वदूती

वह दरना वह भभा रथ पर चल कर आता  
नव युग का मानव प्रदात जीवन परित सा  
धरा पक का दग्ध मनोनभ को दीपित कर ।

युग-युग के पतमर भर पड़ते उसने भय स  
 धूल धुंध परसों ७ त्रिगुण अग्नि बाज नर,  
 क्रुद्ध नरहर, अधड उसने साथ खेलते  
 मत्त तुरगो-मे उड, दिव-वपित कर भूतल  
 रथ रत्ना के दाकण रथ से बधिर कर गगन ।  
 नव मधु क फूलों की ज्वाला में वह उष्टित,  
 रूप रंग शोभा सोरभ क अंग गुजरित,  
 दीपित उसम सूक्ष्म भुवन, युग स्वप्न मजरित ।

जाग उठे ला सुरगण महाऽगमन की ध्वनि गुन,  
 ध्यान मौन निव स्वप्न रक्ष में चाक अचानक,  
 आदोन्वित हा उठ सूक्ष्म भासों क आसन,  
 दाम प्रेरणाआ से स्पन्ति अर्पित अंतर,  
 गलित रश्मिया सी पहती ना उर क भीतर ।  
 त्रसा, मणि आरास झाड़, समस्त दशगण  
 उक्ति दृष्टि म दग चतुर्दिक् आत्म मूट हा  
 गुप्त मैत्रणा करते मिलकर, कौन पुण्य वह ?  
 निस्कारित दग सोन रह मन, कौन पुण्य वह ?  
 भय विस्मय म दून पृच्छते, कान पुण्य वह ?

[ दूर धींधी तूफान क उठन का गन ]

### एक दम

काग आ रहा वह भाषण सुद्ध, भुवना का  
 अर्पणी दुधर पदपापा म उचित करता ?  
 भ्रमा या जन मन में भैरव ममर रव भर  
 भू समुद्र का हिलान्वित, भय भंजित करता ।  
 पया यह महा प्रलय कि प्रभंजन महानाश का ?  
 ना धरणा का रत्न अयाया महाशाल या ?  
 टोड़ रह उजाग पया रँपन मना भुवन  
 निरर, यह नर कम्पान, यह महा युगानर ।  
 गया कृतन जा रहा मृग क अर्गिम रथ पर  
 अग्नि पुण्य वह प्राण पुण्य वह नाह पुण्य यह !

## कुठ दत्र

आआ ह, आआ, अभिवादन, गत अभिवादा !

## म्वनूत

शात हा गया नुद गग स्वागत नत हाते !

[ ग्यचत्रा क जागमन का रर ]

## दयी

मान कान तुम तत स्वण म दाम्ण सुंदर,  
धरा गभ न गुह्य तमम म प्रकट सूर्य स'  
मन्ता न तुरगा पर नड ममर हर हर भर  
जन मन का करते आदालित, सिधु उच्छ्वसित'  
जीवन नदन म पत्र उटता नया गान अन  
मन नी मूर्त्ता में जग पडती नयी चतना  
प्राणा क अचतन तम म धेंसी ज्याति नर  
क्षुध स्नायुओं क दीपन में रजत शाति सी !  
शुच निराशा म आशा भशय म आस्था  
अविनय म श्रद्धा सम्मान उपक्षा पट म,  
सधया म तय मकल्प अहता में अन  
द्विधा प्रलय म सृजन धार तम में प्रकाश नर !  
हाय कौन तुम निद्राही नन क ईश्वर स !  
उलट पलट कर दिया निस्तिल जीवन नम तुमन !

## भौवर्ण

[ आम विन्वात भरा भौम्य स्वर ]

म ह वह सौरण, लाक जीवन का प्रतिनिधि !  
नर मानव में, नर जीवन गरिमा म भडित  
युग मानस का पन्न, खिला जा धरा पक म,  
नड चेतन जिसम सजीव सोदय सतुलित !

प्रथम एक अविभक्त मृत्यु म फिर जड़ चेतन !  
 मैं ही मृत प्रकार मृत्तम आ' रूल गगत न  
 सतरंग द्वायातप में विरमित । मृत्यु अमर मैं,  
 जिमने अतर म भविष्य के गत स्वर्णिम युग  
 नर जीवन की शोभा में सागर-में स्पंति  
 विश्व चतना में मरा अहरह अनुप्राणित ।  
 मैं हूँ श्रद्धा का भविष्य, जा यत्त गगत के  
 काल प्रसित गडित माना के भत भविष्यन्  
 वतमान का अतिरम कर, उनमें प्रविष्ट हा,  
 विरसित करता अग जग का नर सीमाओं म ।  
 मैं ही वह निरपेक्ष वि-व सापेक्षों म जा  
 अभिव्यक्त हा जग वाचन मन के मृत्या में —  
 उनके मन्मणों म, उदय विराम, हाम में,  
 उनक भीतर स्थित, निरपेक्ष बना रहता नित ।  
 क्या आश्चर्य कि तुम्हें कल्पनायत् लगता ह ।

### स्वदूती

कना सृष्टि यह, महन् कल्पना जन भविष्य की ।

### सौवण

ऊपर मैं रत्नाभा मा छहग दवा म,  
 सृजन चनना के प्रताक जा सृष्टम अगाधर,  
 नीच मानव गग में मृतित प्रिय जा मुम्हका  
 दशों का रर आत्मगान् विकसित हाता जा ।  
 तुम दीपक म भिष ममभत त्वाप शि-सा का ?  
 रिम्भय करते रम आधी तूफाना में  
 जीवित रहती है यह ? मैं तूफानों ही में  
 जलने वाला अमर याति ह । मैं रहस्य ह ।  
 भंगर मिट्टी क प्रताप ही में पलता ह ।  
 भग्ना क पत्तों पर चट्ट वाचन ज्वाला मा  
 मैंग मैंग निरता । अरर, मागर, कानन में ।

मैं धरा मानर मर श्रष्ट ता शयस्कर ता  
 उम राधन आया भू जीवन श्रैत म  
 शापण दुग वयाय त्य ता भूमि भार हर ।  
 शतिया र पतभागो म भग्ने आया म  
 नर मधु का गुरित मग्निमा गाल पल्लित ।  
 मम चतना भवना र अन्तय उभर का  
 लाह उतना म रग्न आया ह मृतिन ।  
 एक धरा जायत म जन र मन प्राणा र  
 रचि स्वभाय रतिया रर नर मयाचित,  
 युग युग र मानर समय का ममीकरण रर  
 नर मानरता म कर्न आया ह वितरित ।  
 स्वप्न गवाक्षो म दापित अर मुन काल क्षण  
 धरा उच्च म श गद हा रह ममचित  
 युग युग स विचित्र चतना के प्रकाश का  
 मैं जीवन मृता में कगे आया गुपित ।

### स्वप्न

अन्तर का य यह इममें जन भास अतहित ।

### मौवण

आज धरा जानन अचल म उधी प्ररणा,  
 आज जना क साध प्राणप्रद मृजन शक्ति नव  
 अर न कना र रम निकुजो म पल मकन  
 अगणित वक्षो म अर स्पदित नयी चतना ।  
 नर जीवन सोदय उग रहा जन धरणा म  
 मनुष्यत्व की फमल उगलता हँसता भू रज  
 नर मृत्पों की स्तणिम मजरियों से भपित ।

[ यथा म्य म प्रस्थान नव वमतागम का वास्त्रि मगीत ]

### स्वदूती

विस्मय रतमित स लगते निष्प्रभ हो सुरगण  
 नरा मप उद्वलित गोपन सभापण रत ।

## एक देव

धरा गर्भ से प्रकट, धरा म समा गया, ला,  
 वह तेजामय स्वर्ण पुरुष फिर, शत सूर्योज्ज्वल,  
 स्वर्णम पावक से दीपित नर देवों का मन ।  
 नरस रहे शत निस्वर निभर अधिमानम से  
 उज्ज्वल तप्त हिरण्य द्रवित, नर युग प्रभात में—  
 उतर रही हा स्वर्गगा आलोक धारि स्मित,  
 स्वर्ण नूपुरों से मुसुरित सुर बालाओं न—  
 जीवन शोभा से उर्वर करने जन भू का ।

## देवी

चला, चले हम धरा स्वर्ग में, जन मानव उन  
 छोड़ शिदिव की मानस रति प्रिय भोग भूमि का  
 प्रगति निमुक्त जा, चिर निष्क्रिय, वैचित विनाम से ।  
 मर्त्य लाक ही निश्चय भारी का नंदन उन ।

[ देवी का अस्तग्न मूचक वाचि मगत ]

## स्वर्गनी

स्वर्ण पृष्ठ खुल रहा लोफ जीवन का भू पर,  
 जन मानवता प्राण प्रेरणा न हिलोलित ।  
 नर जन धामों, नर जन नगरों में सुग सुगर्गित  
 नर युग अस्त्रादय हँसता नर आशा दापित ।  
 स्वर्ण धनिया मी घन उटना स्वत अतिल में  
 मुग्ध क्षितिज यातायन लगते स्वप्न भञ्जित  
 स्वर्ग दूत ना उतर रहा नर युग प्रभात अर  
 शुभ स्तान्निमा भग रन्मियो य तिभर मा,  
 नर पपातों न अरर प। में अभिहित ।  
 हय सुगर गग मिपुत नग रह वाति षड् म  
 रता गभरित मे मग। तरुनी य पपप ।



द्रुति हा उठी गय गाँवमा अपनर गभ री  
 दर धरा मग शत रन-दायाओ म रेंप ।  
 निगिन विश्व आनर छुद मा प्राण तरगित,  
 अगणित रर लय गगतिया म जीवन मुगणित ।

### स्वदूत

दय दुग मिग गये र्द्वे गय धूमिल परत  
 छणा द्वय र्भर्षा र भय मशय पीड़न र  
 तन शोपण अन्याय, अनय मे मुक्त धरा पर  
 एर छत्र अर शाति साम्य, स्वातन्त्र्य प्रतिष्ठित ।  
 शत्रु शाति चा सर त्रेष्ठ गति मानय मन री  
 निमर म्पणिम पर्यो मे जन भु रा जीवन  
 सृजन हप स स्पदित, सतरेंग श्री शाभा म  
 विचरण करता राधा रधन हीन विश्व म ।  
 नव युग उत्तर मना रहे उल्लसित धरा तन  
 प्रीति मृग मे गुथ मचरित तन मन लोरा  
 नर रमत म नर जीवन मधु सचय करने ।

### समयेत गीत

युग प्रभात नर युग रसत नर  
 जन भु का अभिनदन गाये ।

कितने हृदयों र मृदु स्पदन  
 कितना रे मधु हास अत्रकण  
 क्य से मधु सुमना मे सचित  
 आआ इनके हार रनाये ।

आफल उ-झासो का सौरभ  
 उत्सुर्द अपल नयनों रे नभ  
 एन नीरय मङ्गला म मृति  
 स्मृतिया की माला पहनाये ।

युग युग की वह मौन प्रतीक्षा  
मम गुनरित जीवन दाक्षा,  
सफल आज, जन भूम अजित,  
इहं स्नेह से हृदय लगाये ।

य प्रतीक जन हृदय मिलन क,  
जन पूजन, जन आराधन क,  
भार युगा के इनम विकसित,  
इन फूला का शीश रत्नाये !





## स्वप्न और सत्य

[ आदर्श और वास्तविकता के बीच युग सप्त  
दशतक काव्य रूपक ]



कलाकार  
दो मित्र  
छाया चेतनाएँ

श्रृंगड़ाई भग्ता हग रलिया  
 मग्ध मधप करत रंगरलिया,  
 गित पाग में गिगत माहर  
 माणिक मदिग गाली !

[ गान्ग गगता हुआ ]

### कलाकार

पतभर आया, नग नीमन म पतभर आया  
 भर भर पढता युग यग ना मुग्धाया वैभर  
 मन नो टटगी वाहर अगिल निरल आया हा !  
 भाग, तर विचारो का नाटिया उभर कर  
 टूँटी, शुष्क टहनियो सा छितरी पढती ह !  
 प्राण प्रभजन समुच्चुसित सात्कार छाड़ता,  
 सिहर मिहर उटता आदालित जन मन कानन  
 प्रलय गात गा रही चृण पसलिया नगत का  
 नाण मायताण पील पत्तो सी उड कर  
 वृलिमान् हा रहा मौन ममर नदन भर !  
 गिर गिर पड़ते नष्ट भए सुस नीड़ अरक्षित  
 स्वप्न हिमानी जड़ी हृदय की डाल स्पहली  
 निखर गिरर पढती निर्जन म अपात कर !

[ मिना का प्रवण ]

### पहला मित्र

नमस्कार ! फिर उहाँ प्रकृति का छवि ना चित्रण ?  
 तुम्हें धय है !

कलाकार

उहा त्रोट सन्ते ह बच्च !

मा ना अचल ?

माँ का अचल ! टीक, अभी  
बौद्धिक गिणु ही हा ! ( गम्य )

निनिभेष भावुक प्रमा म  
मात्र प्रेयगी का प्रिय मुग दगा रुते हा —  
मुग्ध यक्ष से जीरा स क्तय विमुग हा ।  
य्य प्रमा क विण क्मा तुम जन ममान से  
शापित हाग ।

### दूसरा मंत्र

( विष का अचल ) उमा मधुर मर्तीर दृश्य है ।  
पतभर क मून पंजर में नर उमन का  
हृदय हो उटा हा स्पदित नर भाव उच्युमित ।  
टढ़ा मढ़ी रगाश्चा का रगपटी म  
नर शाभा का क्षितिज भास्ना मभर रपित ।  
झायानप उपर्षेप उटना मृदु नृति पर्ण म ।  
मुट्टी भर रगाश्चा में निस्तथ रिचन की  
जागाऽरास्ता गून उटी हा, रग ध्वनित हा ।  
नर भावा से आदानित पशु दह लता सा  
मुग्ध यत्रा भूम रहा मधु गटु पाशु म ।  
रगाण त्या लय की बहती धागण हा ।  
कला प्ररणा कुगल तृलि क मगाऽरा म  
मृत हा उटी है अगार शाभा में अचल ।  
माभिर शक्ति है ।

### क्यासार

( गम्य भाव म ) माउ प्रकृति उमा अचल है ।—  
मरुत अगार क, पृष्ठा अम क, हास अचल क  
झायानप म शक्ति है विमरा कर्णात्त ।  
नर भाव माँ प्रलय मूर्त्त विमर जागत न  
क म भिराता नरग कगा क विनि रागर ।



## कगानार

नहीं जाता तफाद, विद्या नहीं है,  
 मन सारा नहा पहला रभी धुमाना !  
 पर ना मी ना थारा ना मन् लगता है  
 उसम रम आग जुगऊ ' ना अतर न  
 घटनासा ना प्रिय लगता है रम निमम  
 तिररफार रर उस भलाऊ ' यह मनुष्य स  
 सभर है क्या ? नहा, उडा निदयना है यह !  
 मै क्या रू ? विश है मुमम न हा सगा '  
 मन ता मर हाथ नहा है नर वदि म  
 न चल सकृगा, मरु भावना हा प्रिय है '  
 ना, अनजाने ही मन का माहित रर लता है,  
 रिलर का अनिमेष लुट लता निज छरि म  
 रूप रश्मियों म उलभा पलना ना विस्मय,—  
 जा प्राणा ना पागल रर वरस भावा क  
 स्वम पाश म नाथ, हृदय तमय रर दता—  
 मे उसका ही आकृंगा निच रग वृलि स,  
 रह चाह कुछ भी हा मै यह नहा जानता !

## पहला मिन

क्या प्रलाप करते हा पागल प्रमी का सा !  
 मानर जगत कहा सुदर है प्रवृति जगत स,  
 न्याय अधिन विक्रमित है वह पुष्पा पगुआ स !  
 ऊध रर पद दलित कर चुकी नड निसग का,  
 शीश भुकागा वह पुन प्रवृति न सम्भुस ?—  
 जिस प्रवृति प्रभु मान हप से पूँछ हिलाती  
 थार पणत रंगा करती परो क नाच !  
 फूला ना रगान शिराया स रहस्यमय  
 ज्ञानवाहिनी मुद्म नाडिया ह मनुष्य ना !  
 मानर रग म वनगण वावन म प्रश रर  
 नया प्रेरणा तुम्ह मिलगा रला न लिप,

शक्ति मूर्ति आ जाण्गी मन्त्रित तूला म ।  
 मानव न मन का गढ़ना सजोच्य बना है ।  
 उन से महज सहायुभृति हा मनुज हृदय का  
 साधकता है, वही प्रेम की क्षमता भी है ।  
 आशा, दसा आस गाल पर मनुज जगत का—  
 रमा हाहाकार छा रहा आन रहा है ।

### दूसरा मित्र

आग मूँद पर सागा, दगा मानव मन का  
 केसा हाहाकार छा रहा आन रहा है ।

### पहला मित्र

शापित रंजना की भृगी रात्कारो म  
 काप रही है अग्न रास्तरिस्ता नगती की ।

### दूसरा मित्र

भोतिरना म वृद्धि भात, नीरन तृष्णा से  
 पराभूत हा, भूल गया नर आत्म नान की ।

### पहला मित्र

एक ओर प्राप्ताद राइ हं रसग विरुषित  
 राग ओर अमग्न्य धिर्माना भाइ पूँम का  
 रोगी भोपड़िया हं, पगओ के विररो सी,—  
 पार विपमता छाया है मान नीरन में ।

### दूसरा मित्र

एक ओर आग्न भण हा रहा मनुज मा  
 पारो ओर दिग अक्षर अरुता का तम  
 भाव धधिता गुनभावा में दृष्टि भजा  
 ओर उलभने जान न पागता पर में,—  
 पार अरावस्ता है प्राण प गता में ॥

## पहला मित्र

आज पुन सगटिन हा रह शापित पाड़ित  
यग युग न पजर रान्हर उट धग गर्भ मे,—  
नाति दाइता दागनल मा भूमि नप मा  
महत् नर्ग विष्णान हा रहा मानन जग म ।

## दूसरा मित्र

आज पुन सगटिन हा रहा मानन न मन  
नन प्रकाश म दापित अतश्चतन गङ्ग  
नय चेतता से मध भक्त सूक्ष्म शिरार्थे—  
रूपातर अन निरुत् महत् मानन भावा न ।

## पहला मित्र

लोर साम्य की ब्रह्म भावना मे प्रति हा  
सामूहिक निर्माण हेतु अन उत्सुन भु जा ।

## दूसरा मित्र

निशद विष्टन मानवता न भावा से प्रति  
आध्यात्मिक उन्नयन हेतु आतुर मानन मन ।

[ वाद विवाह मूषक ध्वनि मगात प्रभाव ]

## कलाकार

ऊन गया मन घोर विरोधाभासों का सुन  
वनात कल्पना दाड समातर त यों के संग ।

[ जगदी देना ह ]

आऽऽह !

[ बाहर म नार उगान का आवाज ]

( नार ) नाति की नय हा ! प्रजातन की जय हा !  
लान्तरन न नय हा ! जन मगल का जय हा !

## पहला मित्र

मुनो, यधु यह जन समुद्र गजन भरता है  
प्रतिभन्वित हा रह मान वन परत उदर  
ताग रह निर निद्रित भू न निस्वर गङ्गर,  
लासालस यह महन् प्रदशन लास पर का ।

[ दूसरा मित्र न ]

उठा मित्र, त्याहार मनाता जन मानयता,  
चलो, सम्मिन्वित नो हम भी आन पर म  
रवाकार की पवनें टूट रहा निद्रा म,  
उमसा सान दा अपन रलना नीह म  
म्यजो ना पगियो न मँग भावना मग्न हा ।

## दूसरा मित्र

उठता ह पर, लोफ पर में न ना मरुंगा ।  
ना नारो मे रहा तीव्र मरार रभा म  
मर अवर में उठना है । निवन में ना  
गात कर्कशा गहन मम विनामा ना अत्र ।

[ दोना मित्रा ना प्रयात ]

( नार ) तय राष्ट्र ना तय हा । लासनेत्र ना तय हा ।

## बारावा

निमित्त पड़ गयी दह यधिन हा उठ प्राण मा  
नारम तरो फ बाभित जलानर म,  
नाम कहा प्रेणाप्र स्वान य तार  
प्राण गरि का म्यदा कदा विम तय का ।

[ नार मग्न शार ]

एक रूँ ५१११ गरि ह त, मार न  
आगतम । नारि है, गरि विवित

चा विनाम पा म गभरत जिगर धूमित  
 तरण रिद्र भु पर पर स्यादगय प्ररद तन ।  
 तरु बुद्धि मतदादा म चा रदा पूर्ण है ।  
 उसरा थाभा र्भी र्भृति हा अतनभ म  
 आलाकित रर र्ती र्नत निगिन भदा रा ।  
 स्वममयी वह मृत्तभया आनंदमया बह,  
 वरुणा रामल मा वो ममता सी मगलमय  
 प्राति मधरिमा गे भर श्रद्धा मान हृदय रा  
 पीपित रर र्ती रहस्य मय महत्त राध से —  
 सा सी भावा के दल गाल दगा र सम्मुस ।

[ अगस्त्य रर ]

आह ! न जाने किन फूलों की मंदिर गध पा  
 अलस-श्राति जभा लती मधर अगा में ।  
 यलात हा उटा मन,—वाग्य विनाम करूंगा,  
 र्ममो की परिया के छायाचल म छिपकर ।

[ तान पर मा जाता ह ]

## स्वप्न दृश्य

एक

[ मन् मन्तुर् वा वि प्रमगात् वगनात् का भावाक्रान्त मनस्य तावम्प्याम  
अनन्तगत वं सूक्ष्म प्रगागा म विचरण कर्ता ह जिग म्वग कन्त ह ]

[ स्वर्ग चेतना का गात ]

स्वागत, अमरपुरी म आआ ।  
जावन स्वप्नों से निर्भीत हे  
तद्रालस म मत विलमाआ ।

जागा, जागो, दिव्य पाथ ह  
त्यागा भय भय, मुक्त जात ह  
म्यग शिगर यह शुभ शात ह,  
निर्भय, निश्चय, चरण बटाआ ।

यह भतर का मृक्षम मगठन,  
मन रगता आया आराहण  
तुम जड़ नहीं, अनन्तर जनन,  
चेता, मा री भीति भगाआ ।

महानद री उटती लहरी,  
पुण्य यहाँ व अक्षय प्रहरी,  
वम मरण वी विद्रा गहरी  
झाड़ी, तर चीरत पक्ष पाआ ।

क्षणिक अतिथि का का तुम आय  
तन मा प्राणा म कुहलाय  
ता परदात तुम्हें यदि भाय  
भू पर पर विभय ल चाआ ।

[ स्वप्न का चेतना का गात ]

जा विनाग पा म गभवत तिसर धूमिग  
 तरण तिद्र भू पा पर छाग प्रवद तन !  
 तर्क बुद्धि मतवादा म जा रता पुण है !  
 उसकी भाभा रभा स्फुरित हा अंतनभ म  
 आनाकित रर रती म्यन तिगिन भदा का !  
 स्वप्नमयी यह, मृताभया आनंदमया रह  
 वरणा रामल मा का ममता सी मगलमय  
 प्रीति मधरिमा मे भर श्रद्धा मान हृदय री  
 तीपित रर रती रहस्य मय सहज बाध से,—  
 सा सा भावा क दल गाता दगा क सम्पुन !

[ अगस्त्य रकर ]

आह ! न जान स्नि फूलों री मंदिर गध पी  
 अलस-आति रभा लती मबर अगा में !  
 कलात हा उठा मन—बाण विश्राम करुगा  
 म्रमो री परियों के छायागल म द्विपर !

[ तग्न पर ना जाता ]

## स्वप्न दृश्य

एक

[ मन् मधुर वाणि प्रमगान वगारार का भावाक्रान्त मन स्वप्नावस्थाम  
अनजगत् व मूढ प्रगारा म विचरण वग्ना ह जिम स्वग वत्न ह ]

[ स्वर्ग चैनना का गान ]

स्वागत, अमरपुरा म आआ !  
जारन स्वप्नो मे विभीत ह  
तद्रालस म मन विवमाआ !

जागा, जागा, दिव्य पाव ह,  
त्यागा भर भय, मुक्त रात ह  
स्वग गिरार यह शुभ शात ह,  
निर्भय, निश्चय, चरण उदाआ !

यह अतर रा मूढम मगठन,  
मन रग्ता आया आगहण  
तुम जड़ नहीं, अनश्वर जान,  
चता, मन की भीति भगाआ !

महागद की उठनी लहरी,  
पुण्य यहां र अक्षय प्रहरी,  
जन्म मरण की गिरा गहरी  
छाड़ा, तर चीसन पन्न पाआ !

क्षणिह अतिवि दग वा तुम आय  
ता मग प्राणा म तुम्ह वार,  
ता परक्षा तम्हे यन्नि भय  
! पर अविगत स वाआ !

[ मन् व वा वरा म वत्न २ ॥ १ ]



## बुधवार

[ आंगे मग्ता दुआ ]

कमी स्तर-मगति है इस मुदर प्रदश म,  
 स्वग लान है यह क्या, अंतमन का दपण ?  
 जहाँ मान सगात प्रयाहित होता रहता  
 सूक्ष्म भावना अप्परियों न पदक्षप स !  
 निश्चय, यह मानन तग का प्रतिमान रूप है —  
 निगत युगा का भाव विभव है जिसमें सजित !  
 ये कमी छायाएँ विरर रहा अनत म  
 दि य चतनाओं सी स्वप्ना व पगो पर !  
 ये कमे विच्छिन्न हुई जीवन पदाय से !  
 आत्माएँ ह ये क्या जो तन में बंधन का  
 मडराता उड चिद् नभ में नि शब्द अथ सी ?  
 अथवा ये विर रहस शक्तियाँ, मनुज नियति का  
 संचालित मग्ता जा छिप कर स्वदूता सा ?  
 इहै कौन परिचालित करता ?—गूट प्रन है !  
 समन, ये अतर प्रकाश की छायाएँ हा  
 धरती नी रज बाह्य आवरण भर है जिनकी !  
 जीवन का बहुमुसो सत्य ह एफ, अस्तित्व,  
 अध ऊर्ध्व सोपान श्रेणिया म बहु छहरा,  
 एफ दूमर पर निभर है तिनरी सत्ता —  
 एफागा अभिव्यक्ति नहा श्रेयस्वर इनरा !  
 मनुज चेतना भटक गयी क्यों मध्य युगो से  
 भाव लान म ? ऊध्व पथ स्था पगडा उसने !  
 स्वप्न लान में शूय मुक्ति का अनुभव करने ?  
 मुक्ति रिक्त कल्पना नहा, वास्तविग सत्य है !  
 उस प्रतिष्ठित करना हागा तन समाज म  
 महत् वास्तविगता म परिणत कर जानन का !  
 सूक्ष्म स्वग को भी फिर विरहित हाना हागा  
 जन धरणी पर उतर, मृत अन्वयन धारण कर,—  
 यह यथावता म बंधन का रना हुआ है !

[ वास्तविक मंगल व साथ गभार मयुर प्राथना गान ]

यह कैसा उमुक्त प्रार्थना गान यह रहा  
 निर श्रद्धा विश्वास हो उठ अतर्मुग्धगति,  
 गुह्य श्रव्य मन्त्रों के मन्त्र स्फुरित हा उर में  
 उद्गमित हो उठे तडित्ततिहा से दीपित !  
 यह किन आत्माओं का कर्णावन प्रकाश है ?  
 उद्गहस्त की छाया कौन किये य भू पर ?  
 दिव्य महापुरुषों में लगते य पृथ्वी व !  
 स्वप्न देयता ह मैं क्या ? या अति चाग्रह !  
 मुनूँ, धरा के स्वर्गिक प्रतिनिधि क्या कहते ह ?

[ छायाका का मन्त्रानुकरण ]

अभिवादन करता हूँ, श्रद्धानत मन्त्र मे  
 जन-भू व स्वप्ना में पीडित,—रग तृलि स  
 रंगता जा नित धरा चन्ना व क्षत पदतल,  
 उर की कर्णा ममता गाभा सुपमा में भर,—  
 लाक कर्णा का महदाकाक्षा, नर दया म  
 महत् प्रेरणा का अभिलाषी, मत्य चार मे !

प्रथम छाया

मर्त्य जाय ही नहा, अमरताकाक्षा भा तुम !  
 हम भी उन भू के अभिभाकर, उन मरत ह —  
 आत्म मुक्ति पव त्याग लाक चारन वरी पर  
 हमन पारिव स्वाधों का अलिप्तान किया नित !  
 अर भी हम मरपशाल ह स्वयं लाक में  
 भू जीवन व श्रेय व निग—आत्म तेन म  
 माग प्रसगिन कर चरण का धुर तारकर !

क्यापार

मंग भा भू पंग प्रसगिन करे क्या कर !

## प्रथम छाया

सफल मगारव हा तुम जल्य, कला चारा की  
 मृत वास्तविकता उन सर उम जन जीवन  
 नित न साधना द, वह चानन तृष्णा सा  
 मानन अंतर न प्रकाश म रूपांतर न  
 उमे मनुच न याग्य बनाव,—घृणा द्वय सा  
 प्राति द्रवित न । माग श्वर सा प्रतिविधि है ।  
 लाकात्तर जीवन विनाम की क्षत्र है धन,  
 मानन सा जीवन आत्मावृत्ति सा प्रागण है ।

## दुमरी छाया

पुण्य कम रत रहा पाप सा पद मत रासा  
 प्रभु गल सज्जन का करते सम ज्याति दान नित ।  
 एन सवगत प्रम चात मर रात्रा मे,  
 उही प्रम इश्वर निसरा मंदिर मानन उर  
 तुम पवित्र यदि रहा तुम्हें फिर किमसा त्या भय ?  
 सदाचार त्रेयम्बर भू पर स्वग लास ने ।  
 कमे गितते फूल उहें क्या जीवन निन्ता ?  
 उनसा पालन सन का हा रान ह नग म ।  
 क्षमा शन का करा तुम्ह प्रभु क्षमा करेग—  
 प्रम क्षमा, उन दया विनय, सापान स्वग न ।  
 धन्य विनम निराह उहें स्वधाम मिलगा  
 धन्य सत्य पथ चारी, हाग पूणमम व ।  
 धन्य पवित्र हृदय, इश्वर का मुस दरसेगे  
 धन्य शांति चामी, प्रभु न गिशु कहलाग्ग ।  
 धन्य चाय हित यचित स्वग म राय करेग ।  
 तुम धरती न लक्षण, विश्व भर क प्रकाश हा,  
 श्वराय महिमा सा भू पर करा प्रकाशित ।

## तीमरी छाया

राग शोफ आ' नग मनु पाप्ति नग जीवन  
 मुग की तृष्णा—मार गनु तुनेय मनुच सा ।

गग द्वय पट गिपत्रा सा पट तद भयकर  
 अधराग अनान चनित छाया तन भु पर ।  
 आत्म जुद्धि सा अतमग्य अमि पय है दुगम,  
 मराधन सा द्वार विग र्शणिम चातो मे ।  
 मूल अदिद्या है प्रगात्र विमरु उणा सा  
 नाम रूपमय पनायतन, भर, तम मरण है ।  
 राग्ण, दुग्य निदान विगध समम् रर मानर  
 तन मंगत सा माग गह — मध्यमा प्रतिपदा ।  
 क्षण भगुर यह तगत, नित्य वैतन्य न आत्मा  
 निमित्त पनाय अनित्य र्म तग-जावन-वधन —  
 तणा दुग्य सा राग्ण, उससा पृण त्याग रर  
 महण ररे तनगण मरा पय, तार दया रन ।  
 उद, धम र्म मर गग्ण निगण प्राप्ति प । ।

### चायी छाया

इन्द्र फल पर, अमीम दया मागर वा,  
 उमर मर मरर ममात, चातिया यय ह ।  
 मृत्यु अमतर मृत्यु भीत र अरि-नाम म  
 अर पर विद्याम, धम सा मागत्तर ह ।  
 विनय दान, प्राध्या — मपना तन तगा सा  
 इन्द्रगय वा माग्ण राहता मे पृथा पर ।

### पांचयी गगा

अभा लोत्र व आया ह पाकिर यात्रा म  
 अभा गहा भर मर मम र रग भा भर,  
 जा रि लार मरा र प्रिर उरगात्र रि ह ।  
 महापुग्ण जा अ्यानि विद्व तगी र पय पर  
 लुङ्ग गय ह मेत गगातो उगा हा  
 तम अगुगण रिया । भवुत आग्णो सा विधि  
 मतिर व रिग उ हे कर्मोत्र, । रम उ री,

मने विविध प्रयाग त्रिये तन व चीजन म —  
 स्वत मत्य री पाता रर मा रम ररा स ।  
 इश्यर सत्य न रहर रर मत्य इश्यर हे ?  
 सतत अमन् पर सत् री चड तम पर प्रराश री,  
 तथा मृत्यु पर चीजन री तय हाता जग मे ।  
 नियम नियामक टाना रर तथा अभिन ह ।  
 भू चीजन म आन नय क प्रति आग्रह हे ।  
 सभी नया राहिए मनुच री चादू से व्या  
 सभी पुगना क्षण म नया रदल जाणगा ।  
 शास्त्रत आर निरतन सत्य नही हा कुछ भी,  
 अभियक्ति पाता जा चीजन व्यापारा म  
 पुन पुरातन का नूतन म समावेश रर ।  
 सृय तले, रहते ह कुछ भी नया नहा हे,  
 घटयासा री छ्वाड नित्य अभिनय पुराण जा ।  
 सादी सुतो व सात्त्विक तान धाने भर  
 जन जीवन पट बुना सरल लाकाञ्जल मने  
 तनगण क रम रल व मूल्या पर आधारित,  
 हिता शोषण क धरा से उसे बना रर  
 आ' असत्य व क्लमप से रक्षा कर उमकी ।  
 अन्याया अत्याचार व प्रति नृशस क  
 मन नम्र अरता क मिराला प्रयाग नर,  
 युद्ध जर्जरित तग का दिता अहिता री पथ,  
 भीरु हृदय म मानय गारन १न तगाया,—  
 आत्म शक्ति से रात्र पाशविक हिता का बल ।

### कलाकार

अर भी तन मन ममर रर उठता सभ्रम से,  
 पावन मृति के मलय स्पर्श से पुलकाकुल हा  
 रर नया चतनाऽलाक उठ धरा गर्भ से  
 वन्ता नभ की ओर, स्वग मुक्त दीपित करने ।  
 शत प्रणाम जन युग की रम आराध्य ज्याति का ।

## पाचवीं छाया

जा भगल हो ! लाज र्म रत रहा निरंतर  
सेना कग्ना ही प्रणाम रग्ना है मुम्मा !

[ 'स्पृष्टि गपव गजाराव को धुन धार धार आ गमव कपा  
भज मन' व कठ म्बर में डूब जाता ]

## कलाकार

ओ, यह क्या म्वात मुगाय तुलसी के रर है ?

## एक म्बर

मै पहिले ही परम मंत्र दे चुका मिश्र सो !  
राम चरण अलन विना परमार्थ सिद्धि की  
पुण्याशा नाग्द की गिरती रूंद परद र  
नभ में उड़ने की अभिलापा सी मिया है !  
गियाराम मय जान ममन्त जगत को निश्चित  
बार-बार करता प्रणाम युग पाणि नाइ नित !

## दूमरा म्बर

परम लारप्रिय यह तुलसी ही ना नाणी है !

## एक म्बर

मुभ लारप्रिय घनलाते है मूरदाव जी !  
मूर मूर है ! जिार मधु रण का शंखार  
अथ भी पुनो दल चलता र्ग भगत भूमि क  
पर घर है, आगत आंगत पर, भुगन माहिनी  
अपनी लाला म विगुण पर जन जा का मन !  
अथ भा मीर निहंनो मे पगी प्ति इन क  
जालना में पुस्तिका करता र्गी भु क मन,  
यमुता तट नित मुगस्ति रहता गम लाम म !  
दुलभ अतमुगी दृष्टि है ! अथ राम का

सदा ऋणमय रह दराने ! मुझरा उनका  
धनुर्माणधर रूप मदीय प्रगम्य रहा है !

### बगवार

यह क्या मीरा ' भौन, नृत्य म गमाधिन्नी सी !

### दूसरा स्वर

नृत्य निरत गिरिधर म लीन, भाव-रस दृषी,  
प्रम दिवानी मारा कल तमयता है !  
निरर नृपुर धनि से ही उसकी सत्ता का  
मम मधुर आभास रंग का मिलता मतन !

### तीसरा स्वर

ठीक बात है मस्त हुआ मन तब क्यों वाले !

### एक स्वर

शब्द अनाहद के बनीर यह, अन्त प्रेम का  
गुड़ सागर, गूँग-से सदा रहे मुमकाते !

### दूसरा स्वर

सूक्ष्म सुपुम्ना क तारा से भीनी भीनी  
विनी चेतना मुधर चदरिया स्वच्छ आपने  
कुतुप चिह्न स मुक्त धन्य है आप, कि जिसने  
घुँपट का पट राल सत्य क मुरत को रसा  
सद्गुरु से चूनर रँगना या सी त्यो रस दी,—  
अमर रहे साजन की प्रिय शृंगार आपका !

### चौथा स्वर

मुझे आपकी अमर सागिया सदा प्रिय रहा,  
चमत्कारिणी काय दृष्टि, मार्मिक रहस्यमय,—  
उलटनासिया का क्या कहना ! अद्भुत, अद्भुत !  
नदी नाव के नाव समाती रहती प्रतिपन !

## कलाकार

मय मंद्र क्या ये त्रींद्र क मादन स्वर है ।

### चौथा स्वर

अमरा ना है प्रिय शम्य स्मित स्वण धरित्री,  
 पर भागत न अरमण्य जन मुग्य अनात ना  
 दगा करते सदा विगत गौरव स्वप्ना में  
 गोण, निव नायित्वो न प्रति साण रहते ।  
 सामाचिक चतना न अत्र भा जाघन उनम ।  
 नण राष्ट्र का भार वहन करने म अक्षम,  
 नाति पातिया, कुल परिणामे म विभक्त न,  
 र्द्ध रातियो म शासित, मत भद्र प्रताडित ।  
 मै न निज अतर की मणिम मरारो म  
 भू भागो री मरुतियो ना मिया समनय,  
 निरुमाद स्थापित कर गवित भू प्रागण में,—  
 भारत का आत्मा का पश्चिम न चीन ना  
 ना माष्टन-गरिमा मे विग म आभूषित कर ।  
 भातर उर न भावा का पहिनाण मेन  
 म्यर्ण रतत परिधान ग्यस्मित द्यावातप न  
 उषा त्यात्मना की छाया में भू गानन क  
 गातों का पट घुन अभिनय मोन्दर्य बाध स ।—  
 श्री शाना गरिमा स मवित हा उन धग्णा,  
 महत् शा विगात समचित हा ना चीन,  
 यहा मात्र मंदरा विन्य उन क प्रति भग ।  
 तुग प्रपष मर, आग्नाति हा लोटा भू पर,  
 यहा प्रगति का, आत्मानति का पुग्य क्षत्र है ।

[ यानि धरित्री एतान् जनपात ताता न मय स्व-राण  
 न्याय म अत्र ताता न ]



## कलाकार

[ अध जाग्रतावस्था म ]

धन्य भाग्य ह ! सफ्त हा गया मानव जीवन,  
 आज महापुरुषों का क्षण सामीप्य मिल सफा,  
 और महाकवियों का दर्शन लाभ हा सफा !  
 सभी महाकवियों का वाणी जन भगल की  
 महत् भावनाओं से प्रगति रहा निरतर !  
 सभी श्रेष्ठ धर्मों का अभिमत एक रहा है,—  
 ईश्वर पर विश्वास, मृत्यु आरण घरा पर !  
 सभी महापुरुषों के लक्षण एक रहे हैं—  
 आत्मत्याग, जन सेवा, दया, विनय, चरित्रबल !  
 भू की भिन्न परिस्थितियों का भिन्न रूप से  
 सयाजित नित किया स्वर्ग की महत् दया न,  
 मृतिमान हा युग युग म उहु सत्पुरुषों में !  
 सभी लाभ पुरुषों की वाणी सत्य पृत है,  
 सभा दिय द्रष्टा, जन भू के अभिभाषक ह !  
 पर, मानव की नियति हाय, सचमुच निर्मम है !  
 सद् वचनों के लिए यधिर ह हृदय के श्रवण,  
 मनाभमि वध्या है उच्च विचारों के प्रति !  
 दिय प्रेरणाओं के विमुक्त मनुष्य चेतना !  
 सत्य बीज जन प्राणों के रस से सिंचित हा  
 क्यों न प्रसाहित हा उठते जीवन गरिमा में ?  
 कहाँ, कौन सी त्रुटि है ? कौसी परवशता है !  
 अह, कौप उठता मन मानव की दुजलता स !  
 ऊपर स आनर प्रमाश सन जाता तम में  
 अधिकार का और अधेरा बना घरा पर !  
 दु स्वप्नों स आकुल हा उठता है अतर,  
 राद रहा है काई उर को, विश्वासों के  
 शिखर निरतरते जाते सिस्स रही मन की भू,  
 ज्यों अतमन का निधान हो चूर्ण हा रहा,—  
 धन कुहास से आवृत है मानव आत्मा ॥

[ स्वप्न वाक्च वाग्नि सगान कर्गवार का आमा बनव  
उच तथा मूम प्रमाग में विवरण करता ह ]

अह, क्या मूक्षम अनको स्तर है स्वर्गलोफ क ?  
केमा सम्माहन है सध स्फुट यणों का ।  
यह प्राणा का हरित स्वग सा लगता मुदर,  
जीवन की कामना जटा हिल्लवालिन अहरह  
रास्य राशि सी श्यामल, शत यणों में मुकुलित,  
रुद्रिय भृंगा म गुंजित, मधु गधामान्न !  
मदिरा की सगिताएँ ग्रहती । यौवन उमद  
अपरियों की नूपुर ध्वनि मयित ररती मन,—  
अधरिली कलियों सी कोमल देह लताएँ  
अग भगिमा भर, नयनों का रगना अपलर ।

[ भाव पखिनन मूचर वाग्नि सगान ]

यह भागों का स्वर्ग लाक है मना भूमि पर,  
भूत रहा ता समय तप की इरा डारों में ।  
यहाँ घ्यात विमय प्रकाश नीरन नीलापल,  
मयादा में रैधी क्यारिया,—भाव राशि क  
मुकुल स्वप्न-रमित, पश्य पुण्य पत, आदगों की  
लतिकारें लटकी पात्रों स विनयानत हा ।  
मूक्षम वायु मंडन में यापकता है निमत  
मान प्रग्णा की सुगध म ममुच्युमित जा ।  
श्रद्धा ओ' विष्णाम तैरत हम मियुन-अ  
उच्च विचारों क प्रशान तत म रवता-रत,  
अतल नाम उर सग्मी का पर प्रीति तरगिन ।

[ भाव पखिनन मूचर वाग्नि सगान ]

आत्मगुदि क विषमा का विवन ममाधि-अ  
अंतर जाको मग यग ह, धन तानि नत  
सनाया क मः । पर, तरो म ररित,  
वहाँ तगन्मि-अ का विवि-अ हः है ।

मुक्ति की पट्टिका टिमटिमा रहा पीला प्रकाश द,  
 सभ्या न भुङ्गुत सा पीलान्तम निराण कर,—  
 आत्मार्थ उड़ती जुगुनू सी रज्य प्रकाशित !

[ पन भाव परिवर्तन मूचक वाग्नि गगात ]

अधामरी लघु स्वग संप्रदाया में सीमित  
 लटके ह अगणित त्रिशंकु मे, जहमत पापन,  
 मद्रपथी आचारो न भीशुर मन भून  
 जहा रेंगते, दारण धमा-माद नग कर !  
 तहा रूति वार आस्था व भुग्याड़ो पर  
 क्षत्र अहता व दिनाध ह नाइ बसाण  
 मद प्रभा म जो प्रकाश की छाया भर है !  
 आदर्शो व उच स्वग सकाण क्षीण हा,  
 निरग गण जाने क्यों बहु उपशासाआ में,  
 शुष्क कर्म काडा म, जड़ निधियों, नियमों म !

[ वाग्नि गगात व साथ दूर स वाग्नि गगात व स्वर जिनम  
 वक्ताकार का अपन मन व भावा का प्रतिबन्धि मिच्छी ह ]

### महगान

यह क्या मन व राते सपन !  
 तहा स्वग सुख शाति, कहा र  
 धरता व दुख भरें नपन !

सपन भा ता कर व चीते  
 माउ सुख क्षण लगते ताते,  
 धर्म नीति आदर्श सुहल  
 नाम न आते लगते अपने !

यह छायाओं का यतमन  
 क्या रहा ना जानन चतन,  
 अर भा निम्न मधु स्फुतियों व  
 स्वप्नो स दृग लगते भेंपने !

एक वृत्त रे हुआ समापन,  
 स्वर्ग न रहता अभी चिंतन,  
 नग जागरण का नग रण अग  
 नग मग्न के मनरे अपन ।

लौट न आ सकते रीते क्षण  
 उहें न दा अग व्यर्थ निमग्नण,  
 जन मन प्राणण थाच लगा फिर  
 अश्रुत पद चापों स रेंपन ।

### कलाकार

[ चिन्तागुग् म्यर म ]

रहा हाय, मैं भटक गया ह, स्नि लासों म,  
 दु स्वप्नों से पाङ्कित क्यों हा उटना अतर ?  
 क्यों विभक्त कर दिया सत्य का मानव उर न,  
 मानव मन की सीमा ही क्या समझा कारण ?—  
 गड गड कर करता जा नित पूण रा ग्रहण ।  
 जीवन, मन, चतना सभी ता एक सत्य है  
 स्वग धरा, जड़ चतन, एक अभय पूरा है ।

[ नीच के वातावरण में उठकर अवकाश जनित्र कटु मपण का  
 बुद्धिमान वातावरण मुनार्द पन्ना \* ]

ये कैसी चीत्तारे उटना अराता स ?  
 पार तिमिर का चादल घेर रहा हा मग का ।  
 कहा गिर रहा हें मैं ? य क्या गरम लाक ह ?  
 नीच उतर हृदय चुनता जाता रिपाद म,  
 अधकार के भा क्या हाय, पारो म्तर ह ?

[ शायद विगाहना काि च मालिन्य प्रकाश में पन्ना ह कल्पितार अंगि  
 मगना ह्मा कल्पित बलाक कर फिर म्मद निना मन्त ह ता है । ]

## स्वप्न दृश्य

[ २ ]

[ कर्गकार का टु म्बन ग्रन्त जतर जबवनन क छयायकार पूग लारा में भवता ह । मुद्र म वारि न गगीन क स्वर उगव काना म टवगत ह ]

[ ह्यागा मय चनता का गान ]

अधर भी ता प्रकाश है ।  
पलका में रे लवण अभु म्ण  
अधरा पर क्षण मधुर हास है ।

नयनों को प्रिय नींद घनेरी  
चीजन तृष्णा देती फेरी,  
माह निशा की अचल छाया  
मनुज ध्येय इन्द्रिय विलास है !

तृथा आयु की अग्रधि गैरा  
मन की टीम नहा मिट पाइ,  
चार दिवस की मधुर चादनी  
रेन अधेरी फिर उदास है ।

विकसित, पशु ही निश्चय मानव  
कभी देव रह, फिर वह दानव  
हास सतत हाता चीजन में,  
कहन की हाता विनास है ।

जो जैसा वह था रहगा  
वहता पानी सदा बहेगा,  
बड नड मुनि हार गए र  
मनुज प्रकृति का क्रीत दास है ।

लिरा कर्म का नहीं टलेगा  
 अपना यम कुद्ध नहीं चलेगा,  
 कभी मद तो कभी तेज है  
 मन की गति से बँधी सास है !

यहाँ कौन, कब मिमरा सहचर  
 अपने सत्र, सत्रका है इतर,  
 हानि लाभ सुन दुस का दुनिया  
 कभी दूर ता कभी पास है !

### कलाकार

[ कवच्य मू सा ]

अधकार ? वह कैसे हो मरना प्रकाश मा  
 अधकार भी क्या प्रकाश की एक शक्ति है ?  
 या प्रकाश ही अधकार की एक शक्ति हो ?  
 एव पहली है ! उक्त, मैं क्या माच रहा हू !  
 कैसी दूषित वायु यहाँ है गति से भरी !  
 कहा आ गया मैं, किम दृष्टि निर्हीन लोभ में !  
 जहाँ ह्याम युग का निपण्ण तम छाया निष्प्रिय,  
 धार हृदय कापण्य भरा अनुदार देय सा !  
 यह कैसी न्यायो की अधियागी तगरी है  
 जिमसे रही अपरिचित मरी क्या चतना !  
 भ्रष्ट मितियों में सिगत है इतरा प्रागण  
 विनमरे फिर धरीद सगते तुच्छ सिनों !  
 उक्त, कते जालम प्रनाद में मन लाग च,  
 कम हातना ही हा ध्यय क्या जाता का !  
 मुँह मुँह में बँटे, गुन पर-निन्दा में रत  
 एक दूरर प अतिर प हित निन तपर,  
 राग द्रव मे तगर, का तो प फादर,

अहम्भय, अभिमानी, स्वधादेश-शीङ्कित,—  
 हठी, कृत्रिम-मति, भदभाव स भय, विप्रेत,  
 परद्राही, प्रतिशाध क्षयिन, विराग व पीडक,  
 उलह विवाद विनादा घोर विपमता प्रमी  
 निरगमा, नि सत्त, निरगमाहा, निराश मन,  
 राग शान, दारिद्र्य दय के चिन्तित पत्तर  
 निसिल क्षुद्रताओं व जीवन मृत प्रताप से ॥  
 सूख गया प्रेरणा शक्ति का सात हृदय में,  
 उल गत सस्कारों पर चिन्तित इनक शान,  
 रेंग रह जा भाग्य भरोम भग्न रात्र पर ।  
 इसीलिए ये रक्त स्वार्थ व पत फेंका  
 लूटा करते एक दूमरे का जीवन-श्रम,  
 जाति पातियों में बहु सडित, चिपटे रहते  
 पदगण स रूति रातिगत अभ्यासों स ।  
 क्षुद्र सप्रदायों का सामा अतिरम कर ये  
 निमित्त कर पाते न महत् सामाजिक जीवन ।  
 तु छ माह ममता म डूबे परपरागत  
 मनुष्यतला से नाच रहे विधि लिपि पर निर्भर ।

[ कर्मण वाचिष मगात ]

हाय, कौन जीवन उदिनी सिसक्तो है वह ?  
 यह क्या अरला ? छाया सी लिपटी पग स ।  
 छिन्न लता सी कौन अधमरी वह ? क्या विधवा ?  
 जान भागते गा गा कर ये ? क्या अनाथ शिशु ?  
 अह, कैसी जीवन विभीषिका उन धरणा पर  
 जा मान का उचित रगती मनुष्यत से ॥  
 कौन लाग ये ? राग द्वेष कटु कलह बाध व  
 मूर्तिमान कुलित प्रताप स ? निम्न शक्तिया व  
 अमानुषी प्रतिनिधियों स लगते ह तो !

[ मात्र परिवर्तन ध्यान वाग्मि उगान ]

ये क्या सम्झति पीठ, कृता साहित्य डार ह ?  
 क्षुद्र मता में, कृति गुटों में इष्या-मडित ।  
 हास युगान अहताया के मन सगटन,  
 आपम क स्वाधा, सपपो से अनुप्राणित ।  
 सध रंध, प्रच्छन्न रूप स, यत्ति जहा पर  
 पर-परिभव हित तत्पर रहते, स्पधा पीडित ।  
 जीवन कुटा जहा अमृत अद्र्यास उन  
 निम्नय स्तम्भित पर देता क्षणमृत् अतिवि सा ।  
 और सृजन प्ररणा यत्किगत स्तुति विदा पर  
 निर्भर रहती, रिक्त शिल्प मीष्टम मडित ।  
 यहा महत् निमाण न संभव भाव सृष्टिका,  
 हा । मगटित प्रहार सुलभ है महर्षी पर ।  
 बुद्धि चात्रियों का आहत अभिमान प्रदशन  
 यहा मात्र वाणी की सजा, कृतासागिता ।

[ मात्र ध्यान गनार वाग्मि उगान ]

कमे मनोविहार मात्र वन गद चता  
 मत्ता मे हा विलग, प्रिया मे हा गुप्तिन ।  
 मामाविह मत्तुवन रा गया क्या जाया सा ?  
 किन दापो म प्राणा सा संयमन नष्ट हा  
 विप रा फेन गया मन क नैतिह विधात मे ?  
 किम प्रसार गारात्वा हा गया विविन आत्मवल,  
 कयो वाग्मि री अन सगनि पूण हा गड ?  
 युग युग । सगटित मागमय अंनमातर  
 हाय, गा गया महाहाम क अपसार मे ॥  
 य साधारण यत्ति जहा मा क निरामिन  
 श्रुति विहागे सा श्रया ह—चासन गापिन ॥  
 नह, गह दाग्य म्वा ग चान क्य दृग्गा,  
 विहित क अन्त गन क उट मधा मा  
 विमाकार आर्षिय गहगा, देतो मा



कहीं सुना आकाश नहीं, जो स्फुट वायु में  
सास ले सक मन क्षण भर अह, छूट नरक से !

[ नरात्मपूज कएण वाग्नि सगीत जो धार धार लाव जागरण क  
उत्सव सगीत म परिणत ढाकर द्रत स अतनर हाता जाना ह । कलाकार  
की पल्का पर दूसरा स्वप्न चित्र उतरता ह सुदूर स वाहित सगात क  
स्वर धान ह । ]

### जन गात

जायन म फिर नया निधान हा  
एक प्राण, एक कठ गान हा !

वीत अत्र रही निपाद की निशा,  
दारुने लगी प्रयाण की दिशा,  
गगन चूमता अभय निशान हो !

हम विभिन्न हो गये विनाश में,  
हम अभिन्न हो रहे विकास में,  
एक नय प्रय अब समान हो !

क्षुद्र स्वार्थ त्याग नाद स जगें,  
लारु कर्म में महान सत्र लगे !  
रक्त म उफान हा, उठान हो !

शापित कोई कहीं न जन रह,  
पीड़न अयाय अत्र न मन सहे  
जीवन शिल्पी प्रथम, प्रधान हा !

मुक्त यक्ति, सगठित समाज हो,  
गुण ही जन मन किराट ताज हो,  
नय युग का अत्र नया निधान हो !

## बलाकार

आज व्यक्ति सघर्ष लोक जागरण बन रहा  
 धीरे निमग्न स्वार्थों की शृंखला तोड़ कर !  
 किम माया उलस युग जीवन अधिकार फिर  
 निहस उठा मानम उज्ज्वल मंगल प्रभात में !  
 निश्चय ही वह अधिकार था नहा अनेला,  
 अलसाया जीवन प्रसाश था, मानन मन की  
 अंध वीथियों, रुद्र घाटिया में बदी हो  
 म्लान पड़ गया था जो छाया सा कुम्हला नर !  
 चेतन से जड़ का देखें, जड़ से चेतन को  
 दोनों का निष्पत्त एक ही हाता निश्चय !  
 उद्वेलित हा उठा आज स्तम्भित जन सागर  
 प्राणों का नर ज्वार उमड़ता उसके उर में,  
 मज्जित कर दगा वह भू तट, युग प्लानन में  
 बाधाओं को लाघ, उहा अन्माद युगों का !  
 नवल प्ररणा के स्पर्शों ग पुलकित बन मन,  
 आदोलित हा उठा निनिध शाशाओं का जग,  
 नर बसंत की नीमन शाभा में दिगत का  
 मधु प्लावित कर देगा वह, नर गव भेचरित !  
 आ, महान् जागरण, युगों से लोक अभीप्सित  
 भू पलनों पर मृत हा रहा स्वप्न सत्य सा,  
 नगती के वैपश्य-विराधों का, कल्मष का,  
 मिटा सदा को धरा वस्तु के वैरूप्यों का !  
 एर प्राण हा रही धरा, युग युग से रंजित,  
 एक सत्य को बड़ सहस पग भेरि मुक्त हा,  
 जन भू में सरर सगति भग्ते पद तापों ग !  
 कान दिशा वह, तिधर बड़ रहा नन-भू-जावन,  
 मत्त, स्फात, गनित समुद्र सा हिल्लानित हा ?  
 कान प्ररणा उग सागता किम नर पथ पर ?  
 क्या वह इभित प्रदेश ? जन सरर लोक वह ?  
 क्या उसका आदरा रूप ? यह धरा चाना

[ प्राणोमान् वाञ्छित मगात ]

स्फुटित, कुटित, कुलित संस्कार युगों के  
उच्छ्वदित हो जाएँगे मानव अंतर से ?  
विस्तृत उपचेतन गहर, व्यापक मन क्षितिज,  
विकसित हा जाएँगा जन जीवन संपदन ?  
घृणित क्षुद्रताएँ मिट जाएँगी मनुष्य की  
दैन्य अविद्या तमग निरस्त नये प्रकाश से ?  
स्वार्थ लाभ कटु स्पर्धा धूल जाएँगी मन की ?  
रूपांतर ही जाएँगा मानव स्वभाव का ?  
यदि समाज परस्पर घुल मिल जाएँगे तब  
भर जाएँगा अंतराल दानों का गहरा ?  
चिंताओं से मुक्त मनुज आत्मज्ञति में रत  
संस्कृति का नव स्वर्ग उभाएँगा धरणी पर,  
आध्यात्मिक सोपानों पर आरोहण कर नव ?

[ जानक कल्पना मग्न वाञ्छित मगीत सन्मा रण वाधा के निना  
तथा विप्लव के कोराह में अब जाता ह ]

[ स्वप्न म चौकुर ]

अह, यह कैसी दुमुरा रण भेरी बजती है,  
आहत कर दिङ् मडल की दादण गाँन स !  
कौन शक्तियाँ कार्य कर रही भू मानस में ?  
क्यों राष्ट्रों के बीच पड़ ह लोह आकरण ?  
कौन साधनों का प्रयोग कर रहे धराजन  
नव भू स्वर्ग बसाएँगे क्या रक्त सने कर ?  
क्यों भीषण उपकरण जुट रह विश्व धस के ?  
सेनाएँ संगठित हा रहा विकट, भयंकर  
अस्त्र शस्त्र उन रहे विनाशक, बज्र निनादक ?  
काल दप्तर-से जा कराल, जिनके दशन में  
महा नाश के निर्मम तत्त्व हुए ह बदी  
शत प्रलयों का धस, कोटि कुलिशों का पावक  
जिनमें पूनीभूत त्रिगुण महामारी के ॥

[ मनु और विनाय मूवत कर्णतम रात्रि गगत ]

क्यों मानव मन का उत्पीड़न, जा धम जापण  
 आज चन रहा छल उल म, निमम माहम मे ।  
 कहा गया रण धम, मानुपी मयादाएँ  
 विविध मधि विप्रह, समर्माते भू भागों रे —  
 नियम पत्र, पण, निरल राष्ट्रों का मरक्षण  
 श्री सनापरि शाति घोषणा॥ दशों का ?  
 नारर्तीय कमों मे रत स्यों उभय शिखिर अत्र ?  
 मनुत हृदय क्या आन हा गया रतना निमम ?  
 वही माधनों म हागा क्या मृष्टि श्रेय का ?  
 आज साध्य श्री साधन में वशों रतना अत्र ?  
 पकागी सुय स्वप्न रहा मानव ममान का,  
 भौतिक मद मे, जीवन तृष्णा स प्रमत्त हा,  
 निरार गया जा अध नाश में आत्म पराजित ॥  
 युग आदेश यथाय साध चन सर न भू पर ।

[ यात्रि गगत ताप्रव नाश्रनर शता २ गगना और  
 विस्मय गगान चात्तरे मया वाग्यत् ]

रेमा हाहाकार, तुमुन गगनाद हा रहा  
 शत शत रत्न कड़क उटने नभ का निर्दीण रर  
 प्रलय काप से काप रह भू क श्मिगन, अह  
 नरक द्वार गुप्त गया नाश का पया रन भू पर ॥

[ मनु वरुन शान व वाग्य वाग्यकार का स्थान रर आना ॥ व  
 अध धतनाकगना म विस्मयगिगि ररि म इपर उपर गगना ॥ मदूर म  
 वरिगि मगत उगका रगत आररिगि वग्या ॥ व उपर रगत मीन  
 भवग्या म रीठ आना ॥ ]

[ मंत्र वाच्य वाच्य मंगल र गाय वग चतना का गात ]

अंधकार, घा अधकार है,  
अंधकार है ।

रुद्ध मनुज के हृदय द्वार  
घन अधकार छाया अपार है,  
अंधकार है

बाहर जीवन का संघर्षण  
भीतर आशों का गहन  
भरा मान प्राणों में नदन  
उर में दु सह यथा भार है

बदल रहा जन भू का जीवन,  
नितर तनों पर रहा विश्व मन,  
घमड़ रहा उमद अचतन  
मनुज विनय बन रहा हार है ।

युग परिवर्तन का दुर्बह क्षण  
डाल अचेतन का अगुंठन  
आराहण करता नर चतन  
प्रलय सृजन नम दुनिवार है ।

[ वाच्य मंगल म भाव परिवर्तन ]

हँसता नर जावन अरणोदय  
तम प्रकाश में हाता तन्मय,  
सिंधु क्षिति पर दूर स्वप्न स्मित  
उठता स्वर्णिम योति चार है ।

यह स्वर्गिक भावों का शाणित  
जीवन सागर लगता लोहित  
सत्य भरा स्वप्नों का बाहित  
भार मुक्त लग रहा पार है ।

[ आगा उलामग्र वाच्य मंगल व माय यवनिवा पतन ]



## दिग्विजय

[ ज्ञान / सत्य को बहिःतर विजय का काव्य रूपक ]

मस्त  
अप्मरा  
सेच  
नील धनि  
दिगा म्वर  
भू म्वर

[ अनग्नि म अप्सगआ का गान ]

गाआ, जय गाआ !  
इशर का प्रतिनिधि नर,—  
दिग्निचयी मानर पर  
नंदन नन र प्रमून  
हँसे हँसे रसाआ !

आ विघ्नू जालाआ,  
प्राणो की जालाआ,  
रग मत्य मध्य रण  
गतु नर जनाआ !

चडरता पगो पर  
अगरिया, उड़ निम्वर  
दिग् युग का सुरधनु रिमत  
रतन पहराआ !

पृवा वा घट भार,  
उमड़ चैतय नार  
अपि अनंत योरा मयि  
नूपुर भनकाआ !

रजत-नाल मुन व्याम  
निकट गुन भोम माम  
राभा आनद प्राति  
लार मे जगाआ !



मादक नर - दह - गध  
 दिशा हप-मत्त अध  
 मिल धरा-रग, पून  
 सज नर सनाआ !

सुला यानि लाक द्वार  
 अतरिद्ध आर पार  
 भ-मुत रते विहार,  
 भुनन नर उमाआ ।

[ गगात ध्वनि गार गार जतरि १ म रूप हा जाता ह । मरत और अप्परा वा तिजि म वातागप । ]

### मरत

धय, श द-गति, ज्याति-वग की भा अतिरम क  
 किम प्रग म छूट, आ रहा फान अत्र यह ?  
 वायु बाण या अग्निगण ? या दिशा-यान यह ?  
 या नूतन यह उदित हुआ अत्र अतरिद्ध में ?  
 सार चक्र की स्वर्णिम गतिलय म बंध कर जा  
 परिक्लमा करता प्रग। की-मुग्ध, चतुर्दिर्  
 विश्व नृत्य म मत्त—ज्यातिरिगण सा चवल ।

[ प्रक्षपास्त्र व उन्न वा ध्वनि ]

फान मूढ रग, दु माहसी प्रमत्त मनुन या  
 ढीठ पर मुलसाने—गमित दृष्टि गैराने  
 भग कर रहा शुभ शाति नि साम नील की—  
 जहा अमर भी अद्धानत, निशद विचरते  
 अप्सरिया नूपुर उतार अभिसार स्थलों पर  
 आती जाता — सनेना से मान प्रकट कर ।  
 नहा जानता म्या वह, प्रहरी सूर्य दिशा का ?

### जप्परा

अघटनीय यह —काई अमित नील का नाप ।  
 प्रथम गार धरती न गुरु-आकषण से उठ

चन्ता अलस अलध्य शृंग पर नाई भूचर !  
 याह मिथु की लेता हाय, नमन का पुतला !  
 केम ध्वनि सन्त गूँज नीहार लाक का  
 तड़ित् तरंगों में रूषित करते ।—मुनने हा ?

[ ध्वनिगवन स्पष्ट हाव ह ]

एक म्वर

केम हा तुम नीर ? मैं धरता का स्वर ह !

सेचर

नी, प्रमन्न ह,—गगनरग भं !—बोल रहा ह—  
 टीक कार्य कर रहे यात न यत्र—यत्राविधि—  
 अक्षत ह मैं ।—दिशापाल अनुमूल दागने ।—

एक म्वर

केमा लगता यहा ?

सेचर

न पुछो ! — अद्भुत ! अद्भुत !

एक म्वर

दिन भंडल क फल अमुभय वतला सन्ने हा ?

सेचर

रत्न-नील प्रभ म्वर लात ३ विरग रहा हे !  
 शुभ शाति क भाव मौत विमर सागर में  
 दृष रही विमर धनना — भारहाव हा !  
 उय वायुओ की परिप्रना में अदगाहित  
 मा त मय हा रहा — विमिन का महत् स्पग पा !  
 भार नुर तन नेर रहा आरि गति । !  
 गृपगर शत स्पन्दगालो में कैप मुन्

ताने स्वणप्रभ वितान गालाध नील में !  
हरित नील कटुन मा दीप्त रहा भगालन !  
आ, अति रामानन, रहस्यमय, महा दिगा न  
निम्नर नीनम मणि प्रमार यह ! - उहाँ धरा न  
लघु जीवन सघर्ष लान हा आराहो म  
अर्थहोन से लगते घन नीरन अनत म ! -  
यह अगाध, निगाक, अरुल उदधि हा ! धरती  
मात्र नाह्य तल-तल जिसकी — आरग तरंगित !

### एक स्वर

सैमा दीप्त रहा सगोल ? नक्षत्र क्षितिज, भ ?

### स्वचर

तूहत सगोल ? न पूछो, पुरप पुरातन काई  
देस रहा अविनन अनिमेष, समाधि मग्न सा, —  
राम राम में अपने रात बहाड प्रराहित,  
ध्यानानस्थित सा, असग निमाम शाति में !  
स्वण हरित चतना दिशा की सँजा हृदय में  
प्रात मणि आभा सी लिपटी ना अनत में !

### एक स्वर

आ, रोमानक गाथा, निश्चय, अतरिक्ष की !  
गन्य विदात्मा मृत — आत्म साक्षात्कार-न्त !

### स्वचर

दृष्ट नील भर पर शिमत रनारण रसा सा  
विना प्रकाश क्षितिज, भू की स्वणिम कापी सा,  
प्रभा-वृत्त हो अगणित द्वायाओं से विरचित !  
मुक्त प्रमार, — न विविन् भी अगध सामने,  
मात्र दृष्टि ही का सीमा — जा रसे रसा चाती !

नील आम्य पर महा हास्य भर उरल तार  
जगमग करते दिद रीषो-मे नभ करतल में।—  
खगमरित आगत लिपटाण र्गीत दह पर  
गभरती लटी हा दिशा अनंत रक्त म,—  
अधी, गाधारी सी गत मुनो री जनना।  
अतिराव हो तिण शूय या निज मटा मे  
दिगा यानि का उरर र्गन नर नात्ता म।

### एन म्वर

खद्य-भष्ट हा जाय न गेगर दिन प्रमत्त हा।

### गेचर

मुफ नहा र्गमा भय।—दग रहा धरती सा  
एद्रधनुष में तिपती—मुग्ध अनंत यौरना  
नाव रही जा मुक्त उरगा सा अमाम म।  
देग रह अपतर ज्याति घट यौरन शाभा।  
उड़ता गंध घवित दुदल र्गमा परन सा—  
राम्य हरित चाला उतातो र गिगरी पर—  
मूल रहो फामिन नटिया र्गहार सा—  
लहरता लहरा मागर सा र्ग मणि नहा  
धूप द्वाह मय र्गमिद्रित र्गो म र्गपिन।  
नाव रहा पह गिरि शृगो र हाव उटाण  
नील मुदि में।—तिन् प्राराश म मय र्गहित।  
दग रहा हँ—भ फ र्गु र्गो, र्गो का,  
पार पर रहा महार्दीत र्ग पतर मारन—  
रमरण आ रही यहु रिगयार्ण र्गो का  
जा भू फ र्गित्य भर मुग्ध र्गीरन सा।  
यात् आ रहा मुग्धो का र्गवो का प्रतिक्षा  
रमरण र्ग रह होग र भा तिगय मग्ग्या।  
गाध र्ग होग र्ग र्गदभा गाहस र्गी  
वाते—म भी फहा रिग-मया र्ग र्ग में

लटक न चाऊँ—भय न चाऊँ—लाट न पाऊँ ।  
चितित होंगे—महत् शून्य सा पशुकीपन  
निगटा न चाण रहा अन्ता पात्र मुम्मा—  
मनुन चाति मे, गृह स्वदश स चा अत्र विरहित ।  
हँसते होंगे शत्रु—माम न पर लगा न  
मूरज मे मिलने न मर दुगाहम पर—  
रहते हागं—हाम नरा नर क्या जाना नर  
पत्र नट्ट सा लागगा नरतल म धर न  
पर मै मानन अतर की आशाऽमात्ता सा  
केवल प्रथम प्रतीक मात्र है—चा ननादि से  
शदहीन अस महानील न चिर रहस्य को  
चीर चाति नर लिपि में अन्तित गह्वो चागित  
उमर राजाक्षर मत्रा को पटने न हित  
निर आकुल सा—उसने योतिर्मय आंगन का  
अभ्यागत बनने को उत्सुन ।—जयी आन नर ।  
दिग टुंडुभि घापित करती मानन की जय को  
नच वज उटती तारों सा स्पहली पायले—  
पुष्पहार ले स्वागत करता मग्ध अप्सरा  
रश्मि परन, शत मुरधनु छायाओं में लिपटा ।  
दिशा हस्तगत आज साहसा जग पत्र क ।  
दूर हुड़े दिग गत साधारण विष्व प्रगति का  
भू जीवन सयाजन की, मानन विनाम का ।

### एक म्वर

धन्य जयी नर धन्य जयी जानन भू जन का ।

### खचर

ला मै पत्रा की परिन्मा पूण कर नरा—  
घूम समातर क्षितिज वृत्त के दिशा यान में ।  
अत्र धरती पर उतर मातृ भू की पदरन को  
तूम नमन नर अंतरिक्ष क रतत हप सा

मां क चरणों पर अर्पित कर, जन जन म मैं  
स्वर्ग ग्राम भर दूँगा, गापन अनुभव कह—  
यह रहा उड़ा लूँ '—अनिरतनाय, आह,  
नि शब्द नाव, निरार नील, नि साम नील '—

[ हठान निरार नि माम म गप्न गम्भार ध्वनि उठता ह । ]

### नीरु प्रनि

टहरा दिगर टहरा,—भू की पग्निमा कर  
गाल नील सा जाताया, तुम गर म्पीत हा  
लौट रहे अत्र त्तिग् विजया वनर धरता पर ।  
भूना अग्नादय ल जागर—मानरद्र उन ।  
मुना ।—नाल, नि शब्द नाल —मं बाल रहा ह,—  
भग ही गुण शब्द—मीन मुभम तमय ता  
रगी मुगर हा उठना रर नियम म अपन । -  
क्या पाण्णी मनुव ताति एम ममदिग् जय म ?—  
माना, मगल रद्र गुन म धरा पुत्र र  
रितय रतयता पहरा ता —ता एमम रया  
ताड सरगा मानर अधी लाह नियति का ?—  
पाग रहा जा उम रर निमम पाग म ।  
दह प्राण मन में उदा रर दियात्का रा,  
भद बुद्धि म गापण रर रल्पन याति रा,  
जग मृत्यु पगों र तिरर रा दरा र र—  
अह धुलि म अथा कर आवाक ररु रा ।

[ गम्भार ध्वनि प्रभार ]

मुन र दिगर, पहातीव रा रदरापत मुन ।  
वृ रग मेशसह रा भूता क हिन  
भावना म बी भग—। मपाराव र ।  
अहा पाग पर ए पाग रै प।पुत्र का । -  
म उमका गपराव रहा ह —गगा दनापा ।

में, स्वयं पराजित हान मानव न  
 हाथा से—मर ऊन शिरार पर न यह निमय  
 पागगा अपनी सार्धकता,—शाति, याति,  
 आनंद, प्रीति, सौंदर्य अनश्नर—अमृत-तत्त्व ।  
 जा, आ भूत तू मेरा मधि निमंत्रण ल ना—  
 मैं रण व हित भी उद्यत ह—मानव चुन ल ।  
 म प्रसन्न हूँ तेरे निष्पन्न दुःसाहस से,  
 बुद्धि-कशल सासन यत्न स ।—अतरिक्त न  
 भातर अगणित अतरिक्त हं—आकाशों न  
 भातर अमिताकाश सूक्ष्म अति गुह्य, अगाधर,—  
 महाकाल का गूढ निधान दिशा प्रागण पर ।  
 काल जयी बन ।—आत्मनयी हा निश्चयया भी ।  
 जिना मंत्र पर चर, मात्र शास्तामृग सा तू  
 ग्रह से ग्रह पर कूद, क्षितिज स फाद क्षितिज पर  
 यथ करगा क्या ? बाहर न जग में ग्याया  
 नक्षत्रों की चमत्कोध में—रिक्त परिधि ना ।  
 तू ही सन का नेत्र,—केन्द्र ब्रह्मांड—विश्व का—  
 तेरे ही भीतर सूरज, शशि, ग्रह, उपग्रह सन ।  
 आत्ममान, तू धराधाम का बदल स्वर्ग में ।  
 बाध निविध भूदशों का नव मानवता म—  
 आज निराधी शिविरा म जा बँटे हुए ह ।  
 भूभग का तम मत ल जा तू अन्य ग्रहा म—  
 राग द्वेष, कटु घृणा कलह, निंदा प्रतिस्पर्धा ।  
 नक्षत्रों की शुभ्र शांति का युद्ध क्षेत्र व  
 नारनाय कालाहल में मत बदल यथ हा ।

सत्वर

[ समभ्रम ]

गुह्य, पुरातन तम स्वर फिर स सुन पढता है ।

## नीलधनि

अग्निनाशा ह मे !—फिर तुम्हका जगत् चक्र में  
 पीसूँगा,—नर सृष्टि मेंना कर !—विश्व ध्वस्त कर  
 लाक प्रलय तू भले जुला ल,—तुम्हका फिर से  
 काल शिखर जय करना हागा—आत्म उन्नयन कर,  
 जन-भू पर मनुज हृदय का स्वर्ग समा कर !  
 दिक् प्रमत्त, विज्ञान शक्ति से सहिजगत की  
 रचना कर तू, आत्म ज्ञान मे अतजग का—  
 प्रेम-स्वर्ग रज मनुज हृदय में !—दह प्राण मन  
 हो श्वाश्व आनन्द सात में अग्राहण कर !  
 इन्द्रिय जीवन कुमुमित हो भू रा शाभा म,—  
 अत रम अभिषिक्त, चाक्ष उधन से निरहित !  
 एकागी भीतिर विनास से उमद भू-जन  
 मन्यु रुद्र का सहें !—सत्य रा मुरा पहानें !  
 पवरा गयी विविध स्वाथो म मनुज चनना  
 गत मूल्यों, धर्मों, संस्मृतियों मे शत सडित,  
 जानि पाति, यणों दशों म नग्न-विभावित !  
 महत् गंड तब तक जन मन का प्रकृति चमन स  
 उष्ट १ हागा—तम न ल पाण्णा नूतन—  
 हृदय-स्वर्ग राना गभर हागी १ मत्य हित !  
 हु—हुकार रहा निश्चयन प्रकृति गभ में—  
 गज उटा, ला, अर—दृष्ट रहा शन विघ्न !

[ मय गजन तथा वय विनास का धार स्व ]

## गचर

गूढ़, पुरातन, रभहात अतरधनि उटनी !  
 गंठ छान, दिक् मात् छान यह !—बुझा हृद  
 गितगारी सा, अह, अठ रहा मन आत्म पगति !  
 मात्र यत्रान् काय कर रह मा, ता, अयय !  
 लगता है लहर हा उत्रेग पा भू का हृ !



मैं, स्वयं पराजित हान मानव न  
 हाथा से—मर ऊपर शिरसर पर चर रह निभय  
 पाण्णा अपनी सार्धकता,—शाति, ज्याति,  
 आनन्द, प्रीति, सादर्य अनश्वर—अमृत-तरु ।  
 वा, आ भूचर तू मेरा सधि निमंत्रण ल वा—  
 मैं रण न हित भी उद्यत ह—मानव चुन ल ।  
 मैं प्रसन्न हूँ तेरे निष्पन्न दुःसाहस से,  
 बुद्धि कुशल रागल यत्न मे ।—अतरिक्त व  
 भातर अगणित अतरिक्त ह—आकाशों व  
 भीतर अमिताकाश सूक्ष्म अति गुह्य, अगाचर,—  
 महाकाल का गूढ निधान दिशा प्रागण पर ।  
 काल जयी बन ।—आत्मजयी हा विभ्रजया भा ।  
 विना मेरे पर न मान शारदाभृग सा तू  
 ग्रह से ग्रह पर कूद, क्षितिज से फाद क्षितिज पर  
 यर्थ करगा क्या ? बाहर के जग म साया,  
 नक्षत्रों की चमत्काध में—रित परिधि जा ।  
 तू ही सन का केन्द्र,—केन्द्र नल्लाड—निश्चय न—  
 तेरे ही भीतर सूरज, शशि ग्रह उपग्रह सन ।  
 आत्मगान्, तू धराधाम का बदल स्वर्ग में ।  
 नाथ विनिध भूदशों को नय मानरता म—  
 आज विगधी शिरिरा म जा बँटे हुए ह ।  
 भू मन का तम मत ल जा तू अय ग्रहा म—  
 राग द्वेष, नट्ट घृणा क्लह, निदा, प्रतिस्पर्धा ।  
 नक्षत्रों की शुभ्र शाति का युद्ध क्षत्र व  
 नारनाथ कालाहल में मत बदल यथ हा ।

खचर

[ समभ्रम ]

गुह्य, पराजितम स्वर फिर से सुन पड़ता है ।

## नीलवनि

अग्निनाशी हूँ मैं ।—फिर तुम्हको जगत् चक्र में  
 पीमूँगा,—नर सृष्टि सँजो कर ।—निश्च ध्वंस कर  
 लोभ प्रलय तू भले जुला ले,—तुम्हारा फिर से  
 काल शिरार जय करना होगा—आत्म उन्नयन कर,  
 जन-भू पर मनुज हृदय का स्वयं प्रसा कर ।  
 दिक् प्रमत्त, विज्ञान शक्ति से यहिर्जगत की  
 रचना कर तू, आत्म ज्ञान से अतजग का—  
 प्रेम-स्वर्ग रच मनुज हृदय में ।—देह प्राण मन  
 हा इतार्थ आनन्द सात में अरगाहन कर ।  
 इन्द्रिय जीवन कुसुमित हो भू की शाभा म,—  
 अत रस अभिषिक्त, बाह्य बधन से विरहित !  
 एसागी भाँतिर विनास से उमद भूजा  
 मनु्य रद्र का सह ।—सत्य का मुख पहारों ।  
 पयरा गयी विविध स्वार्थों म मनुज गता  
 गत मृत्या, धर्मों, संसृतिया म शत सडित,  
 जाति पाति, रणों दशों म गरा विभाजित !  
 महत् संड जर तक जन मा का प्रवृत्ति घमा से  
 नष्ट न हागा—जम ग ल पाण्णा नृता—  
 हृदय-स्वयं रचा सभर हागी ग मत्य हित ।  
 हु—हुकार रहा निश्चिता प्रवृत्ति गभ में—  
 गरन उटा, लो, अर—दृष्ट रहा शत विघ्न ।

[ मध गजन तथा वस्य निपात का पार रथ ]

## रोर

गूढ़, पुगतन, रभहाग अतर अग्नि उटनी ।  
 गच्छ छाण, निष् मंत्त छाण यह ।—धुम्हा हूँ  
 विनागारी सा, अह उट रहा मा गता पगडि ।  
 मात्र यत्ररत् काय कर रह मा ता, अरपर ।  
 लगता है लहर हा उतेग पग भू का ।

## दिशा स्वर

मा भे, मा भे । मै ह माता दिशा फाल रा  
 अपने तमय उर म धारण करता ह म  
 मूर्तिमती प्रतिद्धाया उमरी ।—उतग राग,  
 उतग, मेरी बाह पड़ कर, उतग भू पर ।  
 नयी दिशा दूँगी मैं मानर मन, भू-जन रा ।  
 दिगभियान हा सफर तुम्हाग, तुम मानर का  
 महाकाल रा नीलरुठ सदश द मरा ।  
 रुद्र और शिव एर साथ ना नारण न नारण,  
 निश्चेतन अतिचतन न स्वामी, फाल ।

## खेचर

मात्र प्रकृति रा आग्रामन यह ।—निभय हँ मैं,  
 तुम्हें समर्पित कर मा, अपना तन मन चीन ।

[ मा-गम ]

दिसलाई पड़ता स्वदेश तट,—सद्य जाते  
 नेता न रज नी सारभ यह ।—उतर गया, ला,  
 मलमल सी दबती परा के नाच मिट्टी—  
 स्नेह स्निग्ध साथी सुगंध नासापुट में भर  
 पुलकित करती तन—अरर की घन नीररता  
 वचित है इस इन्द्रिय दीपन मादन सुख से ।  
 क्षितिज वृत्त अन सामित होकर नर वसत क  
 स्मित पल्लव अधरा से मर्मर स्वागत करता—  
 नील मौन नी चतापनी नहा भूला मन ।  
 लगता जड़ मे भी पा सकता मन चतन रा,  
 यदि चतन ही जड़ है तो जड़ भी चतन है  
 सत्य वही है — दृष्टि मात्र बदली है फल  
 ज्ञान और विज्ञान एर हा तत्त सिखाते ।—  
 कुहरा सा हट गया भद सुल गया वस्तु रा ।  
 ज्ञान दीप्त विज्ञान पथ हा नया पथ है ।

अप्य नहा पथ, अन्य गही पथ, अप्य नही पथ,  
 सुला सर्ग हित मात्र यही सामूहिक पथ है ।—  
 देर रहा मैं मनोनया से दिड मानव सी,  
 लटा हो वह महा दिशा में अधात्वित तन  
 अतल सिधु म तरण, जघा कृति उदर धरा पर,  
 हृदय सर्ग म, मस्तर त्रिदिश क्षितिज स उपर ।  
 जाग रहा यह ध्यान लाग भा, ध्या हीन भी  
 जय नर मानव सी, जय नर विज्ञान ज्ञान सी,  
 भौतिक पथ से वह साध सामाजिक मात्र  
 आध्यात्मिक, सार्वतिक लक्ष्य को—यही साध्य है,  
 यही सुलभ साधन !—पथ स्रष्ट उभय आर है ।

[ जग कोशाल का प्रभाव ]

एक म्बर

देगो, देगो, गगन रग वह, उतर रहा है !  
 अतस्ति न दूत,—उड़ा क्षत्री गोल वह  
 धरती धरती पर पग !

वई म्बर

स्वागत, स्वागत गेवर ।

एक म्बर

विना लङ्कसङ्गा ही, ला, वह गला आ रहा ।  
 गोल दिशा मुग न अगठन, तूम क्षितिज न  
 अम्णव्य अमुनाधर, भद रहस्य गील न ।

वई म्बर

स्वागत ह स्वागत त्वि मात्र, त्र्याम जयी नर ।  
 रूढ द्वार गुन गण धरा हित आन स्वर्ग न ।

## दिगा म्वर

मा भे, मा भ । मै ह माता दिगा, माल का  
 अपने तमय उर म धारण उगता ह मै  
 मृतिमती प्रतिच्छाया उमरी ।—उतग सर,  
 उतग मेरी गह पण्ड र, उतग भू पर ।  
 नयी दिशा दूँगा मै मानव मन भू-जन से ।  
 दिगभियान हा सफ़्त तुम्हारा, तुम मानव का  
 महाकाल का नीलकण्ठ सँश द मका ।  
 रुद्र चार शिन एव साथ का कारण क कारण,  
 निश्चतन अतिचतन क स्वामी, काल ।

## खचर

मात्र प्रकृति का आग्नासन यह ।—निभय हँ मै,  
 तुम्हें समर्पित कर मा, अपना तन मन जीवन ।

[ माल्यग ]

दिसलाई पडता म्दश तट,—सद्य जाने  
 रोता क रच का सारभ यह ।—उतर गया ला  
 मरमल सी दन्ती परा के नाच मिट्टी—  
 स्नेह सिन्धु साधी मुग्ध नामापुट म भर  
 पुलकित करती तन—अपर की घन नीरवता  
 उचित है इस इन्द्रिय दीपन मादन सुर से ।  
 क्षितिज वृत्त अत्र सामित हाकर नत्र बसत क  
 स्मित पल्लव अधरा से भर्भर स्वागत करता—  
 नील मौन का चतावनी नहा भूला मन ।  
 लगता जड म भी पा सकता मन चेतन का,  
 यदि चतन ही जड है ता जड मां चतन है  
 सत्य वही है — दृष्टि मात्र बदली है कवल  
 ज्ञान आर विज्ञान एव हा तत्र सिसाते ।—  
 कुहरा सा हट गया भद गुल गया वस्तु का ।  
 नान दास विज्ञान पथ ही नया पथ है ।

अन्य नहा पथ, अन्य नहीं पथ, अन्य नहीं पथ,  
 गुला सर्प हित मात्र यही सामूहिक पथ है ।—  
 देस रहा मैं मनोनयन से दिङ् मानन की,  
 लेटा हो वह महा दिशा में अधोत्थित तन  
 अतल सिन्धु म चरण, जघन कृटि उदर धरा पर,  
 हृत् स्वर्ग म, मस्तर त्रिदिग क्षितिज स ऊपर ।  
 जाग रहा वह ध्यान लान भा, ध्यान हीन भी  
 जय नय मानन की, जय नय विज्ञान ज्ञान की,  
 भौतिक पथ से चले साथ सामाजिक मानन  
 आध्यात्मिक, सांस्कृतिक लक्ष्य को—यही साध्य है,  
 यही सुलभ साधन ।—पथ सकट उभय ओर है ।

[ जन कोलाहल का प्रभाव ]

एक म्वर

देसो, देसो, गगन रग वह, उतर रहा है ।  
 अतगिद्ध न दूत,—उड़न चूरी खोल वह,  
 धरती धरती पर पग ।

कई म्वर

स्वागत, स्वागत खेचर ।

एक म्वर

बिना लहरझाण ही, लो, वह चला आ रहा ।  
 खोल दिशा भुरग न अयगुटन, चूम क्षितिज न  
 अण्ण-रग अमृताधर, भद रहस्य नील न ।

कई म्वर

स्वागत ह स्वागत न्दि मानन, आम चयी नर ।  
 रूढ़ द्वार गुल गण धग हित आन म्वर न ।

अभिनन्दन, उदन ह ।

प्रती न हित गुला रग का  
रण क्षितिज तारण ह ।

छाया पथ पर गल मानर रथ  
दग रहा भमा का रति अथ,  
धन्ती क पत्रा से शाभित

ग्रह ग्रह का आगन ह ।

गुले रद्व भजाउन उधन  
जड की सीमा हुद ममापन—  
लगता शूय अनत, सूर्य से

दीप्त, आत्म चेतन ह ।

निश्च मुक्ति ही यक्ति मुक्ति पथ,  
मानरता का तुम्हे है शपथ,  
दिग् युग रचना करा, एक हा

निश्च, एक भञ्जन ह ।

हो भौतिक सोपान स्वर्ग तक,  
आत्म दीप्त अंतर दग अपलक,  
भागों का शाभा में मुकुलित

हो इन्द्रिय जीवन हे ।

प्राणों की चिर चाल पगियों  
शुभ उतना नी अपसरिया,  
धरा-स्वर्ग रचना मगल में

भरता आलिगन ह ।

चदन अभिनन्दन ह ।



